राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

नेहा भसीन ने पहनी हद से ज्यादा...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

शनिवार, 26 नवंबर 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 09 अंकः 336 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

अमेरिकी रिपोर्ट ने भारत को बताया गया है धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों के खिलाफ

विदेश मंत्रालय बोलाः ये उनकी उनकी समझ की कमी को दर्शाता है

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी आयोग (यूएससीआईआरएफ) की भारत में धार्मिक आजादी संबंधी रिपोर्ट को भारत की तरफ से सिरे से नकार दिया गया है। भारत ने अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता के अमेरिकी आयोग (यूएससीआईआरएफ) की रिपोर्ट की आलोचना की है। भारतीय विदेश मंत्रालय की तरफ से कहा गया है कि इसकी कोई विश्वसनीयता नहीं है और ये मनगढंत एजेंडे के आधार पर तैयार

किया गया है। यूएससीआईआरएफ की रिपोर्ट में कहा गया कि कथित तौर पर धार्मिक स्वतंत्रता भारत में खतरे में है। विदेश मंत्रालय ने रिपोर्ट में की गई टिप्पणियों को यूएससीआईआरएफ द्वारा भारत के बारे में पक्षपाती और गलत टिप्पणियों के रूप में वर्णित किया। यूएससीआईआरएफ की रिपोर्ट में कहा गया कि कथित तौर पर धार्मिक स्वतंत्रता भारत में खतरे में है। प्रवक्ताअरिंदम बागची ने कहा कि वे तथ्यों को लगातार गलत तरीके से पेश करने की प्रवृत्ति रखते हैं और यह हमारे संवैधानिक ढांचे, बहुलता और हमारी मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था के बारे में उनकी समझ की कमी को दर्शाता है। इस साल की शुरुआत में अपनी 2022 की वार्षिक रिपोर्ट में यूएससीआईआरएफ ने सिफारिश की थी कि अमेरिकी राज्य विभाग भारत को गंभीर धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन में शामिल होने के लिए षविशेष चिंता का देशष के रूप में नामित करे।

इंडो-पैसिफिक रीजनल डायलॉग में बोले रक्षामंत्री, वैश्विक समुदाय के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है हिंद प्रशांत क्षेत्र

नई दिल्ली। दिल्ली में आयोजित इंडो–पेसिफिक क्षेत्रीय संवाद–2022 में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि वैश्विक समुदाय इसके लिए कई मंचों और एजेंसियों के माध्यम से काम कर रहा है, जिनमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सबसे प्रमुख है। अब हमें सामूहिक सुरक्षा के प्रतिमान को साझा हितों और सभी के लिए साझा सुरक्षा के स्तर तक बढ़ाने की आवश्यकता है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि इंडो–पेसिफिक क्षेत्र न केवल क्षेत्रीय बल्कि व्यापक वैश्विक समुदाय के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण बना हुआ है। इंडो–पेसिफिक सदियों से व्यापार को बढ़ाने में मदद

करती रही है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि सुरक्षा वास्तव में एक सामूहिक उपक्रम बन जाए, तो हम एक वैश्विक व्यवस्था बनाने के बारे में सोच सकते हैं, जो हम सभी के लिए फायदेमंद हो। यदि सुरक्षा वास्तव में सामूहिक उपक्रम बन जाती है, तो हम वैश्विक व्यवस्था को सभी के लिए लाभकारी बनाने के बारे में सोच सकते हैं। राजनाथ सिंह ने हिंद–प्रशांत क्षेत्रीय संवाद, 2022 के दौरान कहा कि सामूहिक सुरक्षा के स्वरूप को साझा हितों, सुरक्षा के स्तर तक ले जाने की आवश्यकता है। भारत विभिन्न हितधारकों के माध्यम से विविध जुड़ावों पर आधारित बहु–आयामी नीति में विश्वास करता है। राष्ट्रीय सुरक्षा को ऐसा मामला नहीं समझा जाना चाहिए, जिसमें एक के लाभ से किसी दूसरे को नुकसान होता है। सभी के लिए हितकारी स्थिति बनाने का प्रयास करना चाहिए।

असम के इतिहास को पीएम मोदी ने बताया संस्कृति की अनमोल विरासत, कहा- हमें पहचान को चुनौती देने वालों को जवाब देना आता है

नई दिल्ली। पीएम नरेंद्र

मोदी ने कहा कि भारत का इतिहास सिर्फ गुलामी का इतिहास नहीं है। भारत का इतिहास योद्धाओं, विजय का इतिहास है। भारत का इतिहास अत्याचारियों के विरुद्ध अभूतपूर्व शौर्य और पराक्रम दिखाने का इतिहास है। भारत का इतिहास

जय का है। भारत का इतिहास जंग का है, त्याग, तप का है। जब कोई मुश्किल दौर, चुनौती खड़ी हुई तो उसका मुकाबला करने के लिए कोई न कोई तलवार की जोर से कुचलने का मंसूबा पाले, आक्रमणकारियों का मां भारती की कोख से जन्मे वीरों ने सामना किया। पीएम मोदी ने कहा कि लाचित बारफूकन भी ऐसे वीर थे। उन्होंने दिखाया कि कट्टरता और आतंक के हर आग का अंत हो जाता है, लेकिन भारत की जीवन ज्योती अमर बनी रहती है। आज देश गुलामी की मानसिकता को छोड़ अपनी विरासत पर गर्व करने के भाव से भरा हुआ है। आज भारत न सिर्फ अपनी सांस्कृतिक विविधता को मना रहा है बल्कि अपनी विभूति अवतरित हुई। हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान बचाने के लिए संत और मनीषी आए। भारत को संस्कृति के ऐतिहासिक नायक–नायिकाओं को गर्व से याद भी कर रहा है।

लाचित बरफूकन की 400वीं जयंती समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमें वीर लाचित की 400वीं जन्म जयंती मनाने का सौभाग्य उस कालखंड में मिला है जब देश अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। यह ऐतिहासिक महोत्सव असम के इतिहास का एक गौरवशाली अध्याय है। पीएम मोदी ने कहा कि हमें पहचान को चुनौती देने वालों को जवाब देना आता है।

हिमंत बिस्वा सरमा के बयान पर कन्हैया कुमार बोले, बीजेपी राहुल की दाढ़ी की नहीं, जनता की थाली की चिंता करें

नई दिल्ली। कांग्रेस की ओर से भारत जोड़ो यात्रा निकाली जा रही है। कांग्रेस के इस भारत जोड़ो यात्रा का नेतृत्व राहुल गांधी कर रहे हैं। हाल में ही राहुल गांधी के दाढ़ी को लेकर असम के मुख्यमंत्री और भाजपा नेता हिमंत बिस्वा सरमा ने एक बयान दे दिया था। इसके

बाद से लगातार कांग्रेस पलटवार कर रही है। इसी कड़ी में कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार ने भी भाजपा पर पलटवार किया है। कन्हैया कुमार ने कहा कि बीजेपी के लोग राहुल गांधी की दाढ़ी नहीं, जनता की थाली की चिंता करें। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि भाजपा को लोगों की गाड़ी की चिंता करनी चाहिए क्योंकि पेट्रोल महंगा हो गया है। कन्हैया कुमार ने दावा किया कि भारत में जोड़ो यात्रा उत्सव नहीं, महोत्सव हो गया है। दरअसल, कन्हैया कुमार एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। कन्हैया कुमार ने यह भी कहा कि हमारे नेता कैसी दाढ़ी रखें, इसकी चिंता आप छोड़ दीजिए। आप ये बताइए– देश के लोग गाड़ी कैसे रखें, जब 100 रुपए लीटर पेट्रोल बिकेगा, तो गाड़ी कैसे रखेंगे। उल्लेखनीय है कि अहमदाबाद में एक जनसभा के दौरान सरमा ने कहा था कि मैंने अभी देखा कि उनका (राहुल का) हुलिया भी बदल गया है। मैंने कुछ दिन पहले एक टेलीविजन साक्षात्कार में कहा था कि उनके नये हुलिये में कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन यदि आपको हुलिया बदलना है तो कम से कम इसे सरदार वल्लभभाई पटेल या जवाहरलाल नेहरू जैसा कर लीजिए। गांधीजी जैसा नजर आते तो बेहतर होता। कन्हैया ने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा पहले कांग्रेस के लिए उत्सव था, मगर अब देश के लिए महोत्सव बन चुका है।

शराब घोटाले में CBI ने दाखिल की चार्जशीट, सिसोदिया का नाम नहीं, AAP बोली– सत्यमेव जयते

नई दिल्ली। दिल्ली शराब घोटाले में सीबीआई की जांच लगातार जारी है। आज सीबीआई की ओर से एक चार्जशीट दाखिल की गई है। इस चार्जशीट में दिल्ली के उप मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के नेता मनीष सिसोदिया का नाम नहीं है। सीबीआई की चार्जशीट में विजय नायक, अभिषेक और पांच अन्य लोगों के नाम है। सीबीआई ने दिल्ली आबकारी नीति घोटाले मामले में 7 आरोपियों के खिलाफ अपना पहला आरोपपत्र दाखिल किया है। मनीष सिसोदिया का नाम नहीं होने को लेकर आम आदमी पार्टी ने अपनी जीत बताई है। आम आदमी पार्टी ने साफ तौर पर कहा है सत्यमेव जयते। आम आदमी पार्टी के प्रवक्ता सौरभ भारद्वाज ने अपने बयान में कहा कि सीबीआई की चार्जशीट में मनीष सिसोदिया का नाम नहीं है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि इतिहास में यहां पहली बार हो रहा है कि जिसे नंबर वन आरोपी बनाया गया उसका नाम चार्जशीट में नहीं है।

जगदानंद सिंह को मनाने में कामयाब हुए लालू, बने रहेंगे प्रदेश अध्यक्ष, बेटे के इस्तीफे के बाद से बताए जा रहे थे नाराज

पटना। बिहार में राजनीतिक उठापटक के बीच राष्ट्रीय जनता दल में बड़ा विवाद खत्म होता दिखाई दे रहा है। राष्ट्रीय जनता दल ने फिलहाल जगदानंद सिंह को मनाने में कामयाबी हासिल की है। खबर के मुताबिक जगदानंद सिंह को लेकर संशय की स्थिति खत्म हो गई है। जगदानंद सिंह राजद के प्रदेश अध्यक्ष बने रहेंगे। खबर के मुताबिक लालू यादव ने जगदानंद सिंह को मनाने की कोशिश की। इसके बाद जगदानंद सिंह मान गए हैं। सूत्रों के मुताबिक लालू यादव और अब्दुल बारी सिद्दीकी की मुलाकात के बाद ही यह तय हो गया है कि जगदानंद सिंह ही

प्रदेश अध्यक्ष बने रहेंगे। पिछले दिनों खबर आई थी कि राजद प्रदेश अध्यक्ष के लिए नए विकल्प तलाश रही है। इसमें अब्दुल बारी सिद्दीकी का नाम सबसे आगे चल रहा था। दरअसल, मंत्री पद से बेटे सुधाकर सिंह के इस्तीफे के बाद से जगदानंद सिंह लगातार नाराज चल रहे थे। उन्होंने राजद के प्रदेश कार्यालय का दौरा भी बंद कर दिया था। वह पार्टी के कामकाज में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं दिखा रहे थे। इसके बाद इस बात की चर्चा जोरों पर ही की राजद जगदानंद सिंह को मनाने की बजाय अब्दुल बारी सिद्दीकी को प्रदेश अध्यक्ष बना सकती हैं। लेकिन लालू यादव ने खुद अपनी ओर से कोशिश की और जगदानंद सिंह को मनाने में कामयाबी हासिल की। बताया जा रहा है कि जगदानंद सिंह ने भी लालू यादव से मुलाकात की है। इस दौरान जगदानंद सिंह के सारे मतभेदों को दूर करने की कोशिश की गई है। लालू यादव किडनी ट्रांसप्लांट के लिए सिंगापुर जाने वाले हैं। ऐसे में वह पार्टी में सब कुछ सामान्य करने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, यह बात तभी सत्य है कि जगदानंद सिंह नीतीश कुमार के कार्यशैली को लेकर सवाल उठाते रहे हैं। महागठबंधन की सरकार बनने के बाद से जगदानंद सिंह के प्रभाव में कमी देखी गई। हालांकि उनके बेटे सुधाकर सिंह को कृषि मंत्री की जिम्मेदारी जरूर दी गई। लेकिन सुधाकर सिंह ने नीतीश कुमार के खिलाफ बोलना शुरू किया। इसके बाद उनका इस्तीफा भी हो गया। हालांकि अब तक यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि सुधाकर सिंह ने खुद इस्तीफा दिया है या उनसे इस्तीफा लिया गया है।

लॉटरी टिकट खरीदने के लिए बनाया नकली नोट, मां–बेटी गिरफ्तार

केरल पुलिस ने कोट्टायम बाजार से लॉटरी टिकट खरीदने के लिए कथित तौर पर नकली नोटों का इस्तेमाल करने के आरोप में एक महिला और उसकी बेटी को गिरफ्तार किया है। कोट्टायम पश्चिम पुलिस ने बृहस्पतिवार को अंबालाप्पुझा निवासी विलासिनी (68) और उसकी बेटी शीबा (34) को गिरफ्तार किया। लॉटरी टिकट खरीदने के लिए दिए गए नोटों पर एक लॉटरी दुकान के मालिक को संदेह होने के बाद उसने इसकी सूचना पुलिस को दी, जिसके बाद विलासिनी को पकड़ा गया। पुलिस ने उसे हिरासत में लिया और 100 रुपये के 14 नकली नोट बरामद किए और इसमें उसकी बेटी भी शामिल थी। इसके बाद, पुलिस ने कुरिची में उनके किराए के घर पर छापा मारा और 500 रुपये के 31 नकली नोट, 200 रुपये के सात नकली नोट और अन्य कीमतों के कुछ नकली नोट बरामद किए।

वित्त मंत्री ने राज्यों के मंत्रियों संग की बजट पूर्व परामर्श बैठक, फडणवीस ने दिया 5,900 करोड़ का प्रस्ताव, जयराम ठाकुर ने रखी ये मांग

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने राज्य के वित्त मंत्रियों के साथ बजट पूर्व परामर्श किया। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री और वित्त मंत्री जयराम ठाकुर ने कहा कि इन 5 वर्षों में हिमाचल प्रदेश को केंद्र सरकार से काफी मदद मिली है। हिमाचल में पर्यटन को बढ़ावा मिले उसके लिए कनेक्टिविटी को लेकर दिक्कत है। इसके लिए ज्यादा से ज्यादा प्रावधान किए जाए, इसके लिए मैंने आग्रह किया है। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री और वित्त मंत्री जयराम ठाकुर ने कहा कि इसके अलावा हिमाचल की सेब की अर्थव्यवस्था बहुत अच्छी है। सेब की पैकेजिंग में जीएसटी में जो बढ़ोतरी हुई है उसको कम करने की मैंने बात की है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण संग बजट पूर्व परामर्श के बाद मीडिया से बात करते हुए महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और वित्त मंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि भारत सरकार ने 1 लाख करोड़ की पूंजी अनुदान योजना निकाली है जिसमें 50 साल के लिए ब्याज मुक्त लोन दे रहे हैं। इसमें हमें 6,800 करोड़ मिले। हमने 5,900 करोड़ का प्रस्ताव दिया है और उम्मीद है कि वो भी हमें मिलेगा। बता दें कि अगले वित्तीय वर्ष 2023–24 के लिए वार्षिक बजट तैयार करने की औपचारिक कवायद बीते 10 अक्टूबर से शुरू हुई। 2023–24 का बजट एक फरवरी को पेश किए जाने की संभावना है। ये आगामी लोकसभा चुनाव से पहले मोदी 2.0 का आखिरी पूर्ण बजट होगा। 2024 के अप्रैल मई में विधानसभा चुनाव होने हैं।

नगर निकाय चुनाव को लेकर भाजपा ने की शक्ति प्रदर्शन की तैयारी

-नगर निगम, नगर पालिका व नगर पंचायत से 25-25 हजार लोगो की भीड़ जुटाने का लक्ष्य

अयोध्या । नगर निकाय चुनाव को लेकर भाजपा ने व्यापक रुप से शक्ति प्रदर्शन की तैयारी की है। यह शक्ति प्रदर्शन 27 नवम्बर। को यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की शहर के जीआईसी मैदान में प्रस्तावित जनसभा के दौरान किया जायेगा। नगर निगम क्षेत्र से 25 हजार व नगर पालिका तथा नगर पंचायत से 25 हजार कुल पचास हजार लोगो की भीड़ जुटाने का लक्ष्य रखा गया है। जिसमें टिकट के दावेदारों से भी भीड़ जुटाने के लिए कहा गया है। जनसभा स्थल व अन्य स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाये जायेंगे। जो टिकट के दावेदारों द्वारा ले आयी जाने वाली भीड़ का आकलन करेगा। जो टिकट मिलने का एक आधार भी बनेगा। इसको लेकर पार्टी कार्यालय पर एक तैयारी बैठक आयोजित की गयी। बैठक को सम्बोधित करते हुए सांसद लल्लू सिंह ने कहा कि अयोध्या वर्तमान में विश्व की सर्वोत्तम नगरी के रुप में स्थापित होने जा रही है। जिसको लेकर यहां के निवासियों में उत्साह का माहौल है। सरकार के प्रयासों की वजह से अयोध्या विश्व पयर्टन के मानचित्र पर स्थापित हो गयी है। जनसभा का उद्देश्य हर घर तक मुख्यमंत्री का संदेश पहुंचाना है। इसलिए इसकी व्यापक तैयारी हो कि प्रत्येक घर से एक व्यक्ति अवश्य जनसभा में सम्मलित हो। महापौर ऋषिकेश उपाध्याय ने कहा कि पदाधिकारी व कार्यकर्ता अपनी सक्रियता और बढ़ा दें। हर वार्ड में हर परिवार से एक लक्ष्य बनाकर सम्पर्क स्थापित करना प्रारम्भ कर दें। विभिन्न माध्यमों से लोगो को रैली में आने हेतु प्रेरित करें। विधायक वेद प्रकाश गुप्ता ने कहा कि जीआईसी के मैदान में होने वाली रैली ऐतिहासिक होगी। इसका संदेश काफी व्यापक जायेगा। जिला प्रभारी पद्मसेन चौधरी ने कहा कि पार्टी के टिकट के उम्मीदवारों के लिए भी यह जनसभा एक परीक्षा की भांति होगा। खासकर पार्षद व महापौर हेतु जो भी पार्टी से टिकट चाहते है वह अभी से तैयारियों में जुट जाये। महानगर अध्यक्ष अभिषेक मिश्रा ने कहा कि नगर निगम के हर वार्ड में एक प्लान्ड तरीके से हमें जनसम्पर्क की रणनीति बनानी है। जनसम्पर्क युद्ध स्तर पर चलाना होगा। वार्ड के सभी पदाधिकारी इसके लिए प्रभावी कार्ययोजना बना लें। इस अवसर पर प्रतीक श्रीवास्तव, आलोक द्विवेदी, बालकृष्ण वैश्य, मनमोहन जायसवाल, मनोज श्रीवास्तव, दिव्य प्रकाश तिवारी, परमानंद मिश्रा, रामकुमार सिंह राजू, रमेश दास, अनुज दास, जितेन्द्र दूबे मिंटू प्रधान, गिरीश पाण्डेय डिप्पुल, दिवाकर सिंह, राकेश मणि त्रिपाठी, अशोका द्विवेदी, आकाश मणि त्रिपाठी सभी वार्डो के प्रभारी, अध्यक्ष, संयोजक, महापौर व पार्षद पद हेतु भाजपा से टिकट के दावेदार शामिल थे।

सारथी वाहन बतायेगा परिवार नियोजन के लाभ

–हर ब्लाक में प्रचार प्रसार के लिए चलेंगे 3– 3 सारथी वाहन

अयोध्या । परिवार नियोजन कार्यक्रम में पुरुषों की भागीदारी बढ़ाने के लिए 4 दिसंबर तक पुरुष नसबंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है । इसके तहत मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रांगण से सीएमओ डॉ. अजय राजा ने दो सारथी वाहन को चार दिनों के लिये शहरी और ग्रामीण क्षेत्रो में प्रचार प्रसार के लिये हरी झंडी दिखा कर रवाना किया । इसके अलावा हर ब्लाक को प्रचार प्रसार के लिए 3–3 सारथी वाहन दिये गए हैं ।

परिवार नियोजन की इस बार की थीम – ''अब पुरुष निभाएंगे जिम्मेदारी, परिवार नियोजन अपनाकर दिखायेंगे अपनी भागीदारी'' थीम के साथ मनाया जा रहा है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अजय राजा ने बताया कि वाहन हर ब्लाक के गांवों में घूम घूम कर परिवार नियोजन को बढ़ावा देने , सीमित और छोटे परिवार का सन्देश देने और दो बच्चो के बीच में 5 साल का अन्तर रखो का सन्देश देगी और वहां के लोगो को जागरूक करने का काम करेगा साथ ही परिवार नियोजन के अस्थाई और स्थाई साधनों के प्रयोग के लिये प्रेरित करेगा द्य परिवार नियोजन के विषय में विशेषकर ग्रामीण परिवेश के लोगो को जागरूक करने के लिए सारथी वाहन कारगर साबित होगा इस वाहन के माध्यम से परिवार नियोजन की आवश्यकता परिवार नियोजन के साधनों महिला एवं पुरुष नसबंदी के फायदे तथा इसके लिए लाभार्थी को दिए जाने वाले धनराशि के बारे में जानकारी दी जायेगी। उन्होंने बताया कि पुरुष नसबंदी पखवाड़ा दो चरणों मे चलाया जा रहा है । 21 से 27 में एएनएम, आशा कार्यकर्ता ग्रह भ्रमण कर पुरुष वर्ग को दम्पतियों को परिवार नियोजन साधनों व पुरुषों को नसबंदी के बारे में जागरूक कर उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए प्रेरित करेंगी, उनका नाम दर्ज करेंगी । जो नसबंदी के इच्छुक है। दूसरे चरण में सेवा प्रदायगी चरण आयोजित होगा। इस दौरान चिन्हित सामुदायिकध्प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर आने वाले योग्य दंपति को इच्छित गर्भ निरोधक साधन व सेवा उपलब्ध करायेगी।

समाज में परिवार नियोजन के विषय में व्याप्त भ्रांतियों को दूर करने के लिए एवं लोगों को जागरूक करने के लिए सारथी वाहन पर एक परामर्शदाता भी लगाया गया है। साथ ही मिशन परिवार विकास के अंतर्गत चलाये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में लोगों को जानकारी देने के लिए ऑडियो क्लिप एवं पम्पलेट का भी सहारा लिया जा रहा है ।

सारथी वाहन के द्वारा जनपद सहित सभी 11 ब्लाकों पूराबाजार, मयाबाजार, तारुन,खंडासा, मिल्कीपुर, मवई, रुदौली, बीकापुर मसौधा, हरिंगटनगंज ,सोहावल एवं नगरीय क्षेत्रों में किया जायेगा। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अजय राजा, जिला कार्यक्रम प्रबंधक राम प्रकाश पटेल , डीसीपीएम अमित कुमार, जिला परिवार नियोजन लॉजिस्टिक मैनेजर रामेश्वर त्रिपाठी, जिला परिवार नियोजन विशेषज्ञ यदुवीर सिंह ,डीईआईसी मैनेजर डॉ हम्माद और स्वास्थ्य

वन अधिकार आंदोलन की ग्राम स्तरीय बैठक हुई सम्पन्न

बहराइच। जिले के मोतीपुर तहसील के अंतर्गत वनटांगिया ग्राम महबूब नगर में वन अधिकार आंदोलन के ग्राम स्तरीय संगठन की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता देवनारायण वर्मा ने कीसइस बैठक को सम्बोधित करते हुए टांगिया श्रमिक क्षतरपाल गिरि ने कहा कि अरबों रुपए मूल्य के जंगल को अपने खून–पसीने से सींचकर खड़ा करने वाले आज अपनी पहचान के मोहताज हैं। पूरा गांव एक अदद परिवार रजिस्टर की प्रतिलिपि के लिए तरस रहा है।सदस्य रामनिवास ने कहा कि वर्ष 2019 में 144 दावेदारों के अधिकार पत्र स्वीकृत हुए थे किंतु उन्हें अभी तक अधिकार पत्र वितरित नहीं किया गया है इसके अलावा जिन 103 लोगों के दावे को खारिज किया गया था, उन्हें अभी तक लिखित सूचना नहीं दी गई है।

यह एक साजिश है जिसके तहत लोगों को अपील करने अवसर नहीं दिया जा रहा है।सदस्य श्री रामचंद्र ने कहा कि वन विभाग ने बिना ग्राम स्तरीय वन अधिकार समिति को सूचित किए खेतों की जीपीएस से पैमाइश की है जो कि उचित नहीं है।वन अधिकार कार्यकर्ता जंग हिंदुस्तानी ने संबोधित करते हुए कहा कि वर्ष 2019 में तत्कालीन जिलाधिकारी श्री शंभू नाथ जी की अध्यक्षता में जिला स्तरीय वन अधिकार समिति ने महबूबनगर को राजस्व ग्राम घोषित करने का प्रस्ताव शासन में प्रेषित किया गया था जो अभिमत के लिए वन विभाग के पास अभी तक लंबित है और उस पर वन विभाग द्वारा अभिमत व्यक्त नहीं किया गया है। कितने लंबे समय तक पत्रावली को रोके रखना किसी साजिश का हिस्सा प्रतीत हो रहा है इस बारे में शीघ्र ही मुख्यमंत्री जी से मिलकर उन्हें अवगत कराया जाएगा। बैठक को रामसमुझ मौर्य,लव कुश, रामनारायण आदि ने संबोधित किया।

दो दिन में गिरफ्तारी न होने पर होगा बड़ा आंदोलन

बहराइच।शहर में एक सप्ताह पूर्व रात में अधिवक्ता को अज्ञात बदमाश ने गोली मार दी थी। जिनका इलाज लखनऊ में चल रहा है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। लेकिन अभी तक गिरफ्तारी नहीं हुई। इसको लेकर आज जिला बार एसोसिएशन के वकीलों ने कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा।साथ ही दो दिन में गिरफ्तारी न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है। शहर के दरगाह थाना क्षेत्र के मोहल्ला बक्शीपुरा निवासी अधिवक्ता अशोक कुमार मिश्रा को बीती 16 नवंबर को गोली मारी गई थी। रात में दो बजे अधिवक्ता के सीने को छूते हुए गोली निकल गई थी। पुलिस ने अज्ञात के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया था।लेकिन एक सप्ताह बीत गया है।

अभी तक आरोपी गिरफ्तार नहीं किया गया है। इसको लेकर जिला बार एसोसिएशन जिलाध्यक्ष गया प्रसाद मिश्रा और महामंत्री पुष्पांजलि नाथ मिश्रा की अगुवाई में सैकड़ों अधिवक्ताओं ने दीवानी कचहरी से मार्च निकाला। सभी ने नारेबेजी करते हुए प्रदर्शन किया। कलेक्ट्रेट में अध्यक्ष ने कहा कि दो दिन में गिरफ्तारी नहीं हुई तो आंदोलन किया जाएगा। महामंत्री ने कहा कि वकीलों को सुरक्षा प्रदान किया जाए। आए दिन वकीलों पर हमले किए जा रहे हैं। इसके बाद सभी ने नगर मजिस्ट्रेट ज्योति राय को ज्ञापन सौंपा।इस दौरान पूर्व अध्यक्ष राम नारायण मिश्रा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अजय कुमार मिश्रा, उपाध्यक्ष धनहश चौरसिया, आलोक कुमार शुक्ला, प्रशांत कुमार, संतोष कुमार, पंकज कुमार, पारस नाथ त्रिपाठी समेत अन्य शामिल रहे।

जिला अधिकारी की नजर पड़ने पर सुधर जाएगी बस स्टैंड की व्यवस्थाएं

रूपईडीहा(बहराइच)। रूपईडीहा बस स्टैंड पर यात्रियों के बैठने तक के इंतजाम नहीं हैं। पंखे तक की व्यवस्था बस अड्डे पर नहीं है। पेयजल के लिए भी लोगो को इधर उधर भटकना पड़ता है। रूपईडीहा के बस अड्डे पर कई बसें हैं। इनमें सभी बसों का संचालन रूपईडीहा से बहराइच के लिए किया जाता है। इन बसों में कुछ ऐसी बसें हैं जो अनफिट हो चुकी हैं। इसके बाद भी रूपईडीहा बहराइच बस स्टैंड से इन बसों का संचालक धडल्ले से हो रहा हैं। लोगो का कहना है कि न बसों में फस्ट एड बॉक्स है और न ही आवश्यक सूचनाएं लिखवाई गई है। इसके अलावा क्षमता से अधिक यात्रियों को बसों में ढोया जा रहा है। साथ ही यात्रियों के साथ लगेज का मंहगा ट्रांसपोर्टिंग चार्ज लिया जाता है। इस रुपईडीहा के प्राइवेट बस अड्डा से यात्रियों के सामान अक्सर गायब हो जाते है। शिकायत के बाद भी इनके यूनियन में कोई सुनवाई नहीं होती है। साथ ही रूपईडीहा बस स्टैंड पर यात्रियों के बैठने की कोई व्यवस्था नहीं है। शौचालय के लिए दूर दराज से आए यात्री खासकर महिलाए और बच्चों को बहुत अधिक परेशानी उठानी पड़ती है। बसों के कर्मचारियों द्वारा आपस में भोंडी भाषा बातचीत करते है जिससे महिलाएं लज्जित हो जाती है। यही नहीं इस रूपईडीहा प्राइवेट बस स्टैंड से संचालित होने वाली बसें रोड पर खड़ी कर सवारी भर्ती है । भाजपा किसान मोर्चा मंडल अध्यक्ष भीमसेन मिश्रा ने कहा कि रूपईडीहा बहराइच प्राइवेट बस अड्डे में अव्यवस्था की ओर जिलाधिकारी बहराइच की नजर पड़ते ही मामला दुरुस्त होने में समय नहीं लगेगा।

अन्तरविभागीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारम्भ 29 से

अयोध्या । डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में अन्तरविभागीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता व कुलपति बिग्रेड व कुलसचिव बिग्रेड खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारम्भ 29 नवम्बर से शुरू होकर 21 दिसम्बर तक चलेगा। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो0 प्रतिभा गोयल द्वारा 29 नवम्बर को पद्मश्री अरूणिमा सिन्हा भवन, एमिनिटी सेंटर में दोपहर एक बजे अन्तरविभागीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारम्भ करेंगी। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने बताया कि परिसर में अन्तरविभागीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के संबंध में क्रीड़ा प्रभारी आवासीय परिसर डॉ0 मुकेश वर्मा द्वारा छात्र–छात्राओं, शिक्षकों, कर्मचारियों को खेलकूद के समय–सारणी से सूचित कर दिया गया है। इसमें 29 नवम्बर से 21 दिसम्बर के बीच टेबल–टेनिस, कबड्डी, योग, कैरम, चेंस, बैडमिंटन, बास्केटबॉल, कराटे, फूटबाल, पॉवर लिफ्टिंग, नेटबॉल, क्रिकेट सहित अन्य प्रतियोगिताएं परिसर में सम्पन्न होगी।

आपसी सहयोग से समस्याओं का किया जायेगा त्वरित समाधान : गौरव दयाल

अयोध्या । नवागत मण्डलायुक्त गौरव दयाल सर्किट हाउस अयोध्या पहुंचे जहां पर उनको गार्ड आफ ऑनर दिया गया। नवागत मण्डलायुक्त वर्ष 2004 बैच के आईएएस है तथा अलीगढ़ से स्थानान्तरण होकर अयोध्या में नवीन तैनाती हुई है। मण्डलायुक्त द्वारा आज अयोध्या मण्डल का कार्यभार भी ग्रहण कर लिया गया। उक्त अवसर पर मण्डलायुक्त ने कहा कि जहां तक मेरी जानकारी में आया है कि मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार बहुत सारे कार्यो को गति दी जा रही है और उसको आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी जिला प्रशासन और मेरी रहेगी और जो भी मुद्दे हैं उसका समाधान त्वरित किया जायेगा। उन्होंने कहा कि अयोध्या को एक बड़े धर्मनगरी के रूप में विकसित करने के लिए हम सबका लगातार प्रयास रहेगा और आप सबके सहयोग से चर्चा होगी जो मुद्दे सामने आएंगे उनका समाधान त्वरित किया जाएगा। तदोपरांत मंडलायुक्त ने सर्किट हाउस से निकलकर हनुमानगढ़ी व रामलला का दर्शन किया। नवागत मण्डलायुक्त का सर्किट हाउस में जिलाधिकारी नितीश कुमार, नगर आयुक्त विशाल सिंह, मुख्य विकास अधिकारी श्रीमती अनिता यादव, अपर आयुक्त प्रशासन एवं न्यायिक, सिटी मजिस्ट्रेट, संयुक्त विकास आयुक्त, अपर जिलाधिकारीगण, नगर मजिस्ट्रेट, सचिव विकास प्राधिकरण एवं अन्य मण्डलीय अधिकारी, आयुक्त कार्यालय के सहायकगण तथा सूचना विभाग सहित अन्य विभागों के अधिकारी भी उपस्थित थे।

10 लाख आबादी को अगले 3 दिनों तक झेलना पड़ेगा जलसंकट

कानपुर। शहर में एक बार फिर 10 लाख आबादी को जलसंकट अगले 3 दिनों तक झेलना पड़ेगा। 24 से 26 नवंबर तक चुन्नीगंज में मेट्रो (यूपीएमआरसी) ट्रैक में पाइप के डायवर्जन के चलते गंगा बैराज प्लांट बंद किया गया है। इसकी वजह से 10 लाख आबादी को जलसंकट झेलना पड़ रहा है। इसे लेकर जलकल विभाग ने तैयारी शुरू कर दी है टैंकरों की व्यवस्था की गई है। जलकल जीएम प्रमोद जौहरी ने बताया कि मेट्रो द्वारा चुन्नीगंज में जल निगम के पाइप का डायवर्जन किया जाना है, इसकी वजह से बैराज प्लांट तीन दिन बंद किया गया है। बैराज के बंद होने से छह करोड़ लीटर जलापूर्ति रुक जाएगी।

डीएपी व उर्वरक की किल्लत के विरोध में कांग्रेसियों ने किया प्रदर्शन

–रिकाबगंज चौराहे पर सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा ज्ञापन

अयोध्या । पूरे जिले में व्याप्त डीएपी और उर्वरक की किल्लत के विरोध में जिला कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश यादव के नेतृत्व में कांग्रेस जनों ने प्रदर्शन कर रिकाबगंज चौराहे पर सिटी मजिस्ट्रेट को ज्ञापन सौंपा। इससे पूर्व कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए पूर्व सांसद डॉ निर्मल खत्री ने कहा भारतीय जनता पार्टी के शासन में किसान जो कि महंगी बिजली और उपज की उचित मूल्य ना मिलने के कारण पहले से ही परेशान चल रहा था उसे रवि की फसल की बुवाई के लिए उर्वरक और डीएपी ना मिल पाना बहुत निंदनीय है। पूर्व सांसद डॉ निर्मल खत्री ने चुनाव पूर्व किसानों की आय दुगना करने के वादे पर सत्ता में आई भाजपा पर किसानों की आय दोगुनी करने में विफल रहने का आरोप लगाया और आरोप लगाया कि भगवा पार्टी की "किसान विरोधी" नीतियों ने कृषक समुदाय को गंभीर संकट में धकेल दिया है। श्री खत्री ने कहा राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (छैव) द्वारा सितंबर 2021 में ग्रामीण भारत में कृषि परिवारों की स्थिति पर जारी रिपोर्ट में एक चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। किसान की आय दोगुनी नहीं हुई है। इसके विपरीत, पांच लोगों का परिवार खेती से प्रतिदिन प्रति व्यक्ति केवल घ्26.67 कमा रहा है। किसान कर्ज में डूब रहे हैं। किसानों की आय बढ़ाने का वादा करने वाली मोदी सरकार ने किसान को कर्ज में डुबो दिया है. भारत के 50.2 प्रतिशत किसान कर्ज में हैं, प्रति परिवार औसतन 74,121 रुपये का कर्ज है। श्री खत्री ने कहा भाजपा सरकार ने आज तक स्वामीनाथन समिति के अनुसार एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) किसानों को वादे के अनुसार नहीं दिया है। जिला अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा सहकारी समितियों के गोदाम पर मात्र 1 बोरी खाद पाने के लिए भी किसानों को लंबी–लंबी कतारें लगानी पड़ रही है और स्थानीय स्तर पर सरकारी अधिकारी गण तथा सत्ताधारी दल के जनप्रतिनिधि समस्या के समाधान का कोई उपाय नहीं कर रहे हैं। महानगर अध्यक्ष वेद सिंह कमल तथा एआईसीसी सदस्य राजेंद्र प्रताप सिंह ने कहा पूरे वर्ष असामान्य वर्षा के कारण किसानों की खेती बर्बाद हो चुकी है और कृषक समुदाय को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जिला प्रवक्ता सुनील कृष्ण गौतम ने कहा केंद्र सरकार दावा करती है कि उसके पास उर्वरक और डीएपी का बहुतायत स्टॉक है पर किसानों को उर्वरक और डीएपी प्राप्त करने में बहुत कठिनाई पैदा हो रही है जिससे लगता है कि सरकार जानबूझकर यूरिया की कमी पैदा कर रही जिससे बिचौलियों को लाभ पहुंचे। उक्त अवसर पर प्रमुख रूप से एआईसीसी सदस्य उग्रसेन मिश्रा ,पीसीसी सदस्य आरिफ आबदी, बृजेश रावत ,विजय पांडे ,भीम शुक्ला ,प्रवीण श्रीवास्तव ,डॉ विनोद गुप्ता, चंचल सोनकर, राम अभिलाष पांडे मोहम्मद शरीफ, रुद्र प्रताप सिंह रिशु ,रामकरण कोरी, ताज मोहम्मद, सेवादल महानगर अध्यक्ष बसंत मिश्रा, रामेंद्र त्रिपाठी ,फ्लावर नकवी ,आशुतोष सिंह, मोहम्मद बशीर ,मोहम्मद टीटू ,मोहम्मद अहमद आदि उपस्थित रहे ।

रसोईया का लड़का बना अध्यापक अध्यापक नदारद

प्रमोद पाण्डेय/
दैनिक बुद्ध का संदेश

हरैया सतघरवा (बलरामपुर) शिक्षा क्षेत्र शिवपुरा अंतर्गत कुछ परिषदीय स्कूलों में अध्यापक आए दिन गायब रहते हैं कुछ स्कूलों में रसोईया शिक्षण कार्य करते हैं जिससे बच्चों का भविष्य चौपट होता जा रहा है शुक्रवार को क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालय देवपुरा में समय 11रू30 बजे हकीकत जानने का प्रयास किया तो स्कूल में रसोईया के पुत्र अंकुर मिश्रा पढ़ाते मिले उन्होंने बताया कि स्कूल में 175 बच्चे पंजीकृत हैं जिसके सापेक्ष 18 बच्चे उपस्थित विद्यालय की प्रभारी प्रधानाध्यापिका सौम्या जयसवाल अवकाश पर हैं तथा एक अध्यापक आज नहीं आए हैं हमारे पिताजी रसोईया हैं उनका आज तबीयत खराब है इसलिए उनके स्थान पर हम पढ़ाने हैं। देवपुरा जाकर देखा गया तो

विद्यालय के छात्र राकेश यादव, आशीष पासवान भीमदेव गुप्ता मनीष, यादवसंगीता, जनक नंदिनी, आदि ने बताया कि स्कूल में शिक्षक पढ़ाने नहीं आते हैं उनके द्वारा नए सर जी को रखकर पढ़वाया जा रहा है। 11:50 बजे प्राथमिक विद्यालय वहां सहायक अध्यापिका किरन शुक्ला मौजूद थे उन्होंने बताया कि कुल 242 छात्र–छात्राएं पंजीकृत जिसके सापेक्ष 145 छात्र छात्राएं उपस्थित हैं इंचार्ज प्रधानाध्यापिका नेहा वर्मा अवकाश पर हैं जबकि विद्यालय के छात्र जुनैद, प्यार बाबू, मनीष, विशाल, सहवान, बच्छराज तथा प्रधान प्रतिनिधि बालकराम यादव, सुनील कुमार मोहर्रम अली ननकने तथा थानेन्दगिरि, आदि लोगों ने बताया कि इंचार्ज प्रधानाध्यापिका नेहा वर्मा कभी स्कूल नहीं आती हैं उनका वेतन घर बैठे उठता रहता है हम लोगों ने जिलाधिकारी समेत बेसिक शिक्षा अधिकारी तथा खंड शिक्षा अधिकारी से शिकायत किया परंतु कोई कार्यवाही नहीं हुई इस संबंध में बेसिक शिक्षा अधिकारी बलरामपुर कल्पना देवी ने बताया कि जांच कराया जा रहा है आरोप सही पाए जाने पर विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

डीएम व एसपी ने किया परसेण्डी गौशाला का निरीक्षण

बहराइच। विगत 30 अगस्त 2022 को जनपद के एक दिवसीय भ्रमण पर आये प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक द्वारा तहसील कैसरगंज अन्तर्गत अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल परसेण्डी का निरीक्षण कर विभिन्न व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए संरक्षित गोवंशों को छाया उपलब्ध कराने हेतु पाकड़ प्रजातिध के पौध रोपित कराएं जाने के निर्देश दिए गए थे। श्री पाठक द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन का जायजा लेने के उद्देश्य से जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चन्द्र ने पुलिस अधीक्षक केशव कुमार चौधरी के साथ गौशाला का निरीक्षण किया। गौशाला के निरीक्षण के दौरान पाया गया कि यहॉ पर संरक्षित गोवंशों के लिए पीपल, बरगद एवं पाकड़ आदि प्रजाति के पौध रोपित किए गए हैं। रोपित किए पौधों की ग्रोथ बहुत अच्छी पायी गई। वर्षा ऋतु में रोपित किए गए पौधों की लम्बाई लगभग 6 से 7 फिट के बीच है। डीएम ने गौशाला की चरागाह में नैपियर घास के खेत का भी निरीक्षण कर आवश्यक जानकारी प्राप्त की। गौशाला में हरा चारा, भूसा, स्वच्छ पानी एवं साफ–सफाई का स्तर अच्छा पाए जाने पर डीएम व एसपी ने प्रधान व सचिव के प्रयासों की सराहना की। निरीक्षण के उपरान्त डीएम व एसपी ने हरा चारा, फल, गुड व चना खिलाकर गोवंशों की गोसेवा की। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी कैसरगंज महेश कुमार कैथल, उप मुख्य पशु चिकित्साधिकारी कैसरगंज डॉ महेन्द्र कुमार सचान व अन्य सम्बन्धित लोग मौजूद रहे।

अखिल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संगठन ने डीएम को किया सम्मानित

बहराइच स सेनानी उत्तराधिकारी संगठन की ओर से जिलाधिकारी बहराइच डॉ दिनेश चन्द्र को राष्ट्रीय स्तर के सेनानियों एवं उत्तराधिकारियों के कार्यक्रम ष्स्मारिका विमोचनष में यथोचित सहयोग के लिए सम्मानित किया गया। ऐसे अवसर पर सेनानी उत्तराधिकारियों द्वारा उन्हें अंगवस्त्र, प्रतीक चिन्ह और स्मारिका भेंट की गई, इसी दौरान अपर जिलाधिकारी (वि.ध्रा.), नगर मजिस्ट्रेट, मुख्य विकास अधिकारी, जिला सूचना अधिकारी एवं मुख्य राजस्व अधिकारी बहराइच को भी प्रतीक चिन्ह और स्मारिका भेंटकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि सेनानी उत्तराधिकारी संगठन ने अपने पूर्वजों के त्याग और बलिदान पर आधारित जो गौरव गाथा इस स्मारिका के माध्यम से प्रकाशित की है, वह प्रशंसनीय है,इस साहित्य के माध्यम से भावी पीढ़ी आजादी के दीवानों के पराक्रम को सहेजने का काम करेंगी। इस अवसर पर संगठन के संरक्षक अनिल कुमार त्रिपाठी ने कहा कि जिस तरह से इस महान आयोजन में जिलाधिकारी बहराइच और प्रशासन ने सकारात्मक भूमिका निभाई है वह सराहना योग्य है।इस अवसर पर संगठन के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री कर्मवीर सिंह एड, आदित्य भान सिंह महामंत्री, रमेश कुमार मिश्र मंत्री जिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिषद बहराइच, मुकेश श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

जन सेवा केन्द्रो पर 0–5 वर्ष के बच्चो का भी आधार बनाने का निर्देश

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। स्तरीय आधार अनुश्रवण समिति की बैठक जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता एवं मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी संजीव रंजन ने 0–5 वर्ष के बच्चो का अधिक से अधिक आधार कार्ड बनवाने का निर्देश दिया। इसके अलावा जन सेवा केन्द्रो पर 0–5 वर्ष के बच्चो का भी आधार बनवाने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने यह भी निर्देश दिया कि गर्भवती महिलाओ की डिलेवरी होने वाले स्वास्थ्य केन्द्रो पर भी जन्म के बादी आधार कार्ड बनवाने की कार्यवाही सुनिश्चित करे। भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण, क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा

सिद्धार्थनगर में आधार अपडेट के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है ताकि निवासी अपना आधार अपडेट आसानी से करा सके इसके लिए विशेष आधार कैंपो का आयोजन किया जा रहा है. जैसा की हम जानते है की आधार एक अतिमहत्वपूर्ण दस्तावेज है इसके माध्यम से केंद्र और राज्य सरकार की सभी योजनाओं का लाभ मिलता है इसलिए इसका अपडेटेड होना जरुरी और लाभदायक है. अगर आपका आधार अपडेटेड होता है तो आपको केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में बहुत आसानी होती है. आधार में एक खघस फीचर है की आप इसे आसानी से अपडेट करा सकते है विशेष तौर पर अपना पता और मोबाइल नंबर हमेशा अपडेट रखे. इस सन्दर्भ में निवासियों को सलाह दी जाती है की अगर आपका आधार बने हुए 10 साल या उससे अधिक हो गए है तो अपना आधार अपडेट जरुर कराये। आधार अपडेट के लिए निर्धारित शुल्क 50 रूपये है। सिद्धार्थनगर में आधार नामांकन और अपडेट करने हेतु लगभग 210 आधार नामांकन और अपडेट मशीन कार्यरत हैं।

इन आधार नामांकन और अपडेट मशीनों ने पिछले एक महीने के दौरान लगभग 10.65 हजार नए आधार नामांकन और लगभग 12.46 हजार आधार अपडेट किए हैं। उत्तर प्रदेश में इस समय फैमिली आईडी बनाने का प्रोजेक्ट भी चल रहा है जिससे आधार के माध्यम से बेहतर सुविधाएं निवासियों को दी जा सकेंगी। पहचान का प्रमाण से ऑनलाइन भी अपडेट कर सकते है जिसके लिए निर्धारित शुल्क रूपये है। अपने नजदीकी आधार केंद्र का पता जानने लिए लॉग इन करें. आप आधार भुवन पोर्टल के माध्यम से भी अपने नजदीकी आधार केंद्र की जानकारी प्राप्त कर सकते है। इस अवसर पर उपरोक्त के अतिरिक्त अपर जिलाधिकारी (वि0रा0) उमाशंकर, अपर पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ, जिला समाज कल्याण अधिकारी डा0 राहुल गुप्ता, जिला कार्यक्रम अधिकारी सुभांगी कुलकर्णी, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी सच्चिदानन्द सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी देवेन्द्र कुमार पाण्डेय, सहायक प्रबन्धक यू.आई.डी.ए.आई. ऐमन परवेज, तथा अन्य संबधित अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

मुख्य विकास अधिकारी जयेंद्र कुमार ने किया पशुपालन विभाग की समीक्षा बैठक

दैनिक बुद्ध का संदेश

तुलसियापुर। जनपद के विकास भवन सभागार में मुख्य विकास अधिकारी जयेंद्र कुमार ने पशुपालन विभाग की समीक्षा बैठक किया। समीक्षा बैठक में प्रभारी मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ आरबी यादव के साथ तहसील स्तरीय उप मुख्य पशु चिकित्साधिकारी तथा समस्त विकास खंडों के पशु चिकित्साधिकारी उपस्थित रहे। समीक्षा बैठक के प्रारंभ में प्रभारी मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ आरबी यादव ने मुख्य विकास अधिकारी जयंत कुमार का अभिवादन करते हुए सभी योजनाओं की प्रगति से क्रमबद्ध अवगत कराया। मुख्य विकास अधिकारी ने पशुपालन विभाग की योजनाओं जैसे अमृत महोत्सव अंतर्गत 100 दिवस में 75 लाख कृत्रिम गर्भाधान योजना,पशुधन बीमा योजना, सहभागिता योजना, केसीसी पशुपालन योजना, गौशाला में संरक्षित पशुओं की समीक्षा, उनके भरण पोषण एवं चिकित्सा से संबंधित बिंदुओं पर समीक्षा

विस्तृत रूप से की। मुख्य विकास अधिकारी ने विशेष रुप से अमृत महोत्सव को अंगीकृत करने हेतु 100 दिवसीय 75 लाख कृत्रिम गर्भाधान योजना के सापेक्ष जनपद का लक्ष्य 65868 को समय से पूर्ण करने पर विशेष जोर देते हुए सभी को आवश्यक दिशा निर्देश दिए साथ हीं साथ केसीसी पशुपालन एवं पशुधन बीमा योजना पर जोर देते हुए कहा कि पशुपालकों को दुधारू जानवर के भरण पोषण हेतु केसीसी योजना सभी पशु चिकित्साधिकारी एवं पशुधन प्रसार अधिकारी स्वयं अपने स्तर से फार्म की प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद बैंक से संपर्क करें तथा उसके प्रगति से मुझे भी अवगत कराएं। गांव में आंगनबाड़ी के माध्यम से कुपोषित बच्चों का चयन करते हुए उनके माता–पिता को सहभागिता योजना के अंतर्गत गौशाला से गोवंश देकर इस योजना से आच्छादित करें । जनपद में घूम रहे बेसहारा निराश्रित छुट्टा पशुओं को एक अभियान के तहत एक साथ एक दिवस में उसको गौशाला में संरक्षित करें। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि सभी योजनाओं की शत–प्रतिशत लक्ष्यों की पूर्ति समय से होना चाहिए जिससे हम सरकार के उद्देश्यों को पूर्ण कर सकें। समीक्षा बैठक में प्रभारी मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ आरबी यादव ने विकासखंड स्तर पर स्वयं समीक्षा करते हुए सभी पशु चिकित्साधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। समीक्षा बैठक में उप मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ अनवर आलम, डॉ सी एल वर्मा, पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ बलराम चौरसिया, डॉ जावेद अहमद, डॉ प्रभाकर विक्रम सिंह, डॉ महेंद्र तिवारी, डॉ प्रदीप कुमार, डॉ विजय प्रकाश,डॉ बृजेश पटेल, डॉ राजेश कुमार डॉ मनोज पांडे,डॉ विजय वर्मा सहित सभी पशु चिकित्सा अधिकारी उपस्थित रहे।

नशीली पदार्थो की तस्करी रोकने को लेकर नारको को-आर्डिनेशन सेन्टर की बैठक

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। नशीली पदार्थो की तस्करी रोकने के संबध में

नारको को–आर्डिनेशन सेन्टर की बैठक जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में जिलाधिकारी कक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी संजीव रंजन ने उपस्थित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि मादक पदार्थो की तस्करी रोकने के लिए संबधित विभाग आपस में सूचनाओ का आदान प्रदान करे तथा समन्वय बनाकर प्रभावी कार्यवाही करे। इसके साथ ही संदिग्ध व्यक्तियों की सूची तैयार कर ले। जिलाधिकारी ने प्रतिबन्धित दवाओ की तस्करी रोकने का भी निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने बड़ी दुकानो की नियमित जांच करने का निर्देश दिया। डी.एल.ई.ए. अधिकारियों का प्रशिक्षण कराये जाने के लिए समय निर्धारित कर प्रशिक्षण कराने का निर्देश दिया तथा डी.डी.किट उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने अपर पुलिस अधीक्षक को निर्देश दिया कि बार्डर के थाने सक्रिय रहे तथा संदिग्ध लोगो की जांच करे। इस बैठक में उपरोक्त के अतिरिक्त अपर पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ, जिला आबकारी अधिकारी वीर अभिमन्यु कुमार, डिप्टी कमान्डेन्ट एस.एस.बी. 43वी. यशवन्त कुमार, आबकारी निरीक्षक मनोज कुमार शर्मा, संजय कुमार पाण्डेय, अजय कुमार, राम महेश, वरिष्ठ सहायक मुश्ताक अहमद, तथा अन्य संबधित अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

बच्चों ने लगाया पालक, धनिया व टमाटर के पौधों

दैनिक बुद्ध का संदेश

जोगिया/तुलसियापुर। राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के तहत

उच्च प्राथमिक विद्यालय जोगिया के बच्चों द्वारा पौधों के पोषण और घरेलू कूड़े कचरों के प्रबंधन विषय पर प्रोजेक्ट कार्य पूरा किया गया। विद्यालय के छात्र परमेश्वर तथा सचिन की टीम द्वारा स्वास्थ्य, पोषण व कल्याण को प्रोत्साहन देने के उपविषय के अंतर्गत अपने प्रोजेक्ट की समस्या को चुना गया। इसके तहत वेस्ट डिकम्पोजर का उपयोग करके घरेलू कचरों की कम्पोस्टिंग की गई।साथ ही साग सब्जियों, पशु चारों तथा अनाज आदि की फसलों के पौधों के पोषण में डिकम्पोजर युक्त कच्चे गोबर का प्रयोग करने के नवाचारी तरीके का अध्ययन किया गया। प्रोजेक्ट टीम द्वारा स्थानीय स्तर पर पालक,धनिया व टमाटर के पौधों में इसका प्रयोग करके उल्लेखनीय वृद्धि पाई गई।गाइड टीचर अंशुमान सिंह ने बताया कि इस प्रोजेक्ट–कार्य से प्राप्त परिणामों के प्रति लोगों को जागरुक किया जा रहा है। ज्ञात हो कि 30वें राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस प्रोजेक्ट प्रस्तुतिकरण के अंतर्गत मुख्य विषय है–स्वास्थ्य और कल्याण के लिए परितंत्र को समझना। इसके तहत पांच उपविषयों में से स्वास्थ्य पोषण व कल्याण को चुना गया।बच्चों द्वारा किए गए इस प्रोजेक्ट कार्य मे विद्यालय के शिक्षकों राम प्रताप शर्मा, अंशुमान सिंह, प्रदीप कुमार पांडेय, साजदा खातून, शिव कुमार पांडेय, एआरपी अनुपम सिंह, प्रमोद त्रिपाठी, देवेन्द्र पाण्डेय, अजय श्रीवास्तव, शशिकांत त्रिपाठी, स्थानीय जन समुदाय, मीडिया व बच्चों के सहपाठियों का सहयोग प्राप्त हुआ।

युवक ने फांसी लगाकर गंवाई जान, पत्नी पर लगा आरोप

गोल्हौरा थाने की पुलिस ने किया केस दर्ज

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी। थानाक्षेत्र के ग्राम नागापार में एक नव विवाहित युवक ने फांसी लगाकर अपनी जान गंवा दिया। मृतक के स्वजनों ने उसकी पत्नी व ससुराल वालों पर आत्महत्या के लिए विवश करने का आरोप लगाया है। मुकामी थाने की पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु जिला अस्पताल भेज दिया है। और मृतक के पिता की तहरीर पर केस दर्ज कर छानबीन में जुट गई है। घटना बृहस्पतिवार देर सायं की है।

गोल्हौरा थानाक्षेत्र के उक्त गांव निवासी मोहम्मद रफीक इदरीसी ने पुलिस को प्रार्थना पत्र दिया कि उसका पुत्र मोहम्मद इमरान (23) ने ससुराल व पत्नी के प्रताड़ना से घर के बंद कमरे में सुसाइड नोट लिख कर दुपट्टा का फंदा लगाकर आत्महत्या कर लिया है। जिससे उसकी मृत्यु हो गई है। जिसपर थाना स्थानीय पर पुलिस ने मुकदमा अपराध संख्या 152ध्2022 धारा 306 भादवि का अभियोग पंजीकृत कर लिया है। मौके पर थाना प्रभारी निरीक्षक छत्रपाल सिंह मय पुलिस बल के साथ पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर आवश्यक विधिक कार्रवाई में जुट गए हैं। मृतक के पिता रफीक की मानें तो 5 माह पूर्व उसके पुत्र इमरान की शादी बांसी कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में हुई थी। पुत्र की पत्नी और ससुराल वाले लगातार उसे प्रताड़ित करते थे। जिसकी चिंतित व लाचार होकर उसने आत्महत्या कर लिया है। मौके पर पहुंचे सीओ इटवा हरिश्चंद्र ने कहा कि फंदे से लटकता हुआ युवक का शव मिला है। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है। रिपोर्ट के आधार पर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

उर्वरक की कालाबाजारी को लेकर मुख्य सचिव कृषि को दिया ज्ञापन

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जनपद में बाढ़ प्रभावित किसानों को मुआवजा रवी की फसल की बुआई से सम्बन्धित उर्वरक एव बीज की कालाबाजारी को रोकते हुए किसानों प्राथमिकता के आधार पर,बीज उर्वरक उपलब्ध कराए जाने को लेकर समाजवादी पार्टी के पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष कमाल अहमद खान ने अपर मुख्य सचिव कृषि डा देवेश चतुर्वेदी को दिया ज्ञापन उन्होंने ने लिखा है की जनपद के किसानों की हालत विगत महीने बाढ़ आने के कारण तथा ओलादृष्टि से फसल बर्बाद हो चुकी है। वर्तमान में पूरे प्रदेश में रवी फसल की बुआई चल रही है और किसानों को सरकारी गोदामों पर उन्नतशील बीज भी नही मिल पा रही है जिसके चलते मजबूरन किसान प्राइवेट दुकानों से अप्रमाणित बीज लेने को बाध्य हो रहा है। बाढ़ प्रभावित किसानों को अभी तक मुआवाजा नहीं मिलने से किसानों के समक्ष गंभीर आर्थिक संकट उत्पन्न हो गई है, जनपद में धान क्रय केंद्र केवल कागजों में चल रहा है इसीलिए किसानों को उनका अधिकार नही मिल पा रहा है जिससे पूरे प्रदेश में किसान पीड़ित है।

तैयार होगी छात्रों की डिजिटल कुंडली,एक क्लिक पर दिखेगा पूरा डेटा

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। बेसिक शिक्षा विभाग परिषदीय विद्यालयों के

बच्चों के डिजिटल कुंडली तैयार करने में जुटे ईएमआईएस प्रभारी अमित पांडेय

साथ राजकीय, वित्तविहीन, केंद्रीय विद्यालय व मदरसा में पढ़ने वाले बच्चों की डिजिटल कुंडली तैयार करने में जुटा हैघ्। एकीकृत जिला शैक्षिक सूचना प्रणाली (यूडायस) पर एक क्लिक करते ही विद्यालय में कमरों की संख्या से लेकर शिक्षकों व छात्रों के बारे में सभी जानकारी मिलेगी। इस बार पूरा विवरण नए सिरे भरा जाएगा। विद्यार्थियों की डिजिटल डायरी तैयार कराने के लिए विद्यालयवार विवरण भराने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई हैघ्। बेसिक व माध्यमिक शिक्षा विभाग 3488 विद्यालयों का संचालन करा रहा है। सरकारी व प्राइवेट स्कूलों में कक्षा एक से 12 में लगभग साढ़े पांच लाख छात्र पढ़ रहे हैं। वर्ष 1995 के बाद पहली बार यूडायस को पूरी तरह रिक्त कर दिया गया है। चालू सत्र में प्रत्येक छात्र का आनलाइन विवरण भरा जाएगा। चार चरणों में विद्यालयों में उपलब्ध संसाधन भरना है। प्रथम चरण में स्कूलों से संबंधित विवरण अपलोड करना है। द्वितीय चरण में भौतिक सुविधाएं के बारे में आंकड़े भरना है। तृतीय चरण में शिक्षकों व शिक्षणेतर कर्मचारियों में बारे में जानकारी भरा जाएगा। उनकी शैक्षिक योग्यता, निवास सहित अन्य जानकारी भरनी है। चतुर्थ व अंतिम चरण में छात्रों का विवरण भरना है। सभी चरणों के लिए समयसीमा निर्धारित की गई हैघ्। जिला शैक्षिक सूचना प्रणाली के प्रभारी अमित पांडेय ने बताया कि प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक अपने आईडी व पासवर्ड से स्वयं डेटा भर रहे हैं। इसकी मानिटरिंग ब्लाक व जनपद स्तर से किया जा रहा हैघ्।कोई असुविधा होने पर संकुल शिक्षक व ब्लाक के कंप्यूटर प्रधानाध्यापकों की मदद करेंगे। बेसिक शिक्षा अधिकारी देवेंद्र कुमार पांडेय ने कहा कि खंड शिक्षा अधिकारियों को निर्धारित तिथि में विवरण अपलोड कराने का निर्देश दिया गया है। शिथिलता बरतने पर उत्तरदायित्व तय करते हुए कार्रवाई की जाएगी।

बच्चो ने किया घरेलू कूड़े कचरों के प्रबंधन विषय पर प्रोजेक्ट कार्य

दैनिक बुद्ध का संदेश

जोगिया/तुलसियापुर। राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के तहत उच्च प्राथमिक विद्यालय जोगिया के बच्चों द्वारा पौधों के पोषण और घरेलू कूड़े कचरों के प्रबंधन विषय पर प्रोजेक्ट कार्य पूरा किया गया। विद्यालय के छात्र परमेश्वर तथा सचिन की टीम द्वारा स्वास्थ्य, पोषण व कल्याण को प्रोत्साहन देने के उपविषय के अंतर्गत अपने प्रोजेक्ट की समस्या को चुना गया। इसके तहत वेस्ट डिकम्पोजर का उपयोग करके घरेलू कचरों की कम्पोस्टिंग की गई। साथ ही साग सब्जियों, पशु चारों तथा अनाज आदि की फसलों के पौधों के पोषण में डिकम्पोजर युक्त कच्चे गोबर का प्रयोग करने के नवाचारी तरीके का अध्ययन किया गया। प्रोजेक्ट टीम द्वारा स्थानीय स्तर पर पालक,धनिया व टमाटर के पौधों में इसका प्रयोग करके उल्लेखनीय वृद्धि पाई गई। गाइड टीचर अंशुमान सिंह ने बताया कि इस प्रोजेक्ट–कार्य से प्राप्त परिणामों के प्रति लोगों को जागरुक किया जा रहा है। ज्ञात हो कि 30वें राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस प्रोजेक्ट प्रस्तुतिकरण के अंतर्गत मुख्य विषय है–स्वास्थ्य और कल्याण के लिए परितंत्र को समझना। इसके तहत पांच उपविषयों में से स्वास्थ्य पोषण व कल्याण को चुना गया। बच्चों द्वारा किए गए इस प्रोजेक्ट कार्य मे विद्यालय के शिक्षकों राम प्रताप शर्मा, अंशुमान सिंह, प्रदीप कुमार पांडेय, साजदा खातून, शिव कुमार पांडेय, एआरपी अनुपम सिंह, प्रमोद त्रिपाठी, देवेन्द्र पाण्डेय, अजय श्रीवास्तव, शशिकांत त्रिपाठी, स्थानीय जन समुदाय, मीडिया व बच्चों के सहपाठियों का सहयोग प्राप्त हुआ।

सम्पादकीय

कई राज्यों में मध्यावधि चुनाव की आशंका

ऐसा कई कारणों से है। नीतीश कुमार के वापस पाला बदलने से लेकर उनकी पार्टी के राजद में विलय तक की चर्चा है। विलय के समय जदयू और गठबंधन की दूसरी सहयोगी कांग्रेस में टूट का अंदेशा भी जताया जा रहा है। इससे राजनीतिक अस्थिरता पैदा हो सकती है। उधर महाराष्ट्र में भाजपा नेता बृहन्नमुंबई ...

भारत में लगभग पूरे साल चुनाव चलते रहते हैं फिर भी पार्टियों की चुनाव की भूख शांत नहीं होती है। अभी हिमाचल प्रदेश का चुनाव हुआ और उसके नतीजे ईवीएम में ही बंद हैं। गुजरात में चुनाव चल रहा है और दिल्ली में नगर निगम का चुनाव हो रहा है। अगले साल कोई आठ राज्यों में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। इस बीच कई राज्यों में ऐसे राजनीतिक हालात पैदा हो रहे हैं, जिनसे मध्यावधि चुनाव की आशंका पैदा हो रही है। अभी के हालात को देखते हुए कम से कम तीन ऐसे राज्य हैं, जहां अलग अलग पार्टियों की सरकार है और वहां मध्यावधि चुनाव का अंदेशा जताया जा रहा है। इन राज्यों में खास बात यह है कि तीनों में से किसी राज्य में भाजपा का मुख्यमंत्री नहीं है। एक राज्य में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी होने के बावजूद सरकार में जूनियर पार्टनर है और उसके मुख्यमंत्री रहे नेता सरकार में उप मुख्यमंत्री हैं। बाकी दोनों राज्यों में भाजपा विरोधी सरकार है। बिहार, झारखंड और महाराष्ट्र ये तीन राज्य ऐसे हैं, जहां अलग अलग कारणों से समय से पहले चुनाव होने का अंदेशा जताया जा रहा है। पक्ष और विपक्ष दोनों की पार्टियां समय से पहले चुनाव की तैयारी कर रही हैं। झारखंड में भारतीय जनता पार्टी और उसकी केंद्र सरकार ने राज्य की हेमंत सोरेन सरकार पर कई तरह से दबाव बनाया है। मुख्यमंत्री, उनके परिवार के सदस्यों, करीबी सहयोगियों और पार्टी नेताओं के खिलाफ केंद्रीय एजेंसियों की जांच चल रही है तो मुख्यमंत्री की विधानसभा सदस्यता पर भी चुनाव आयोग की तलवार लटकी है। इसे देखते हुए मुख्यमंत्री खुद ही चुनाव की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने चुनाव के समय होने वाली तमाम लोक लुभावन घोषणाएं अभी कर दी हैं। आरक्षण की सीमा बढ़ा कर 77 फीसदी करने से लेकर पुरानी पेंशन योजना बहाल करने और स्थानीयता नीति का बिल पास कराने सहित वे सारे काम करके इंतजार कर रहे हैं कि भाजपा का अगला कदम क्या होता है। विधानसभा का कार्यकाल 2024 के अंत तक है। झारखंड से सटे बिहार में वैसे तो सात पार्टियों का गठबंधन काफी मजबूत है इसके बावजूद सरकार 2025 के अंत तक चल पाएगी, इसमें संदेह है। ऐसा कई कारणों से है। नीतीश कुमार के वापस पाला बदलने से लेकर उनकी पार्टी के राजद में विलय तक की चर्चा है। विलय के समय जदयू और गठबंधन की दूसरी सहयोगी कांग्रेस में टूट का अंदेशा भी जताया जा रहा है। इससे राजनीतिक अस्थिरता पैदा हो सकती है। उधर महाराष्ट्र में भाजपा नेता बृहन्नमुंबई महानगर निगम के चुनाव का इंतजार कर रहे हैं। बीएमसी के चुनाव के बाद सरकार चलने की संभावना बहुत कम है। सबसे बड़ी पार्टी होने के बावजूद भाजपा ने शिव सेना से अलग हुए एकनाथ शिंदे को मुख्यमंत्री बनाया है। पार्टी चाहती है कि अप्रैल–मई 2024 में लोकसभा के साथ ही महाराष्ट्र का चुनाव हो जाए।

ट्रंप को हलके से ना लें

2016 में भी ट्रंप की जीत की संभावना किसी ने नहीं जताई थी। लेकिन उन्होंने साबित किया कि वे अमेरिका में जड़ जमा चुकी एक परिघटना की नुमाइंदगी करते हैं। वही कहानी वे दोहरा दें, तो उस पर शायद किसी को आश्चर्य नहीं होगा। डॉनल्ड ट्रंप के 2024 का राष्ट्रपति चुनाव लडने का एलान कर देने से रिपब्लिकन पार्टी के एक हिस्से बेचौनी है। ये हिस्सा अब उन्हें पार्टी के लिए बोझ मानता है। कई रिपब्लिकन सांसदों ने ये बात खुल कर कही है। उनके मुताबिक आठ नवंबर को हुए मिड टर्म चुनावों में राष्ट्रपति जो बाइडेन के प्रति भारी जन असंतोष के बावजूद रिपब्लिकन पार्टी बड़ी जीत दर्ज करने में नाकाम रही। इसका ठीकरा वे ट्रंप पर फोड़ते हैं और यह ध्यान दिलाते हैं कि ट्रंप समर्थित कई खास उम्मीदवार चुनाव हार गए। खबरों के मुताबिक कुछ सांसद अगले छह दिसंबर को जॉर्जिया राज्य से एक सीनेटर के होने वाले चुनाव के नतीजों का इंतजार कर रहे हैं। आठ नवंबर को वहां हुए चुनाव में कोई उम्मीदवार 50 प्रतिशत से अधिक वोट हासिल नहीं कर सका। इसलिए अब वहां दोबारा मतदान होगा। कई रिपब्लिकन नेताओं की नजर यह देखने पर टिकी है ट्रंप की उम्मीदवारी की घोषणा का जॉर्जिया के मतदाताओं पर कैसा असर होता है। लेकिन रिपब्लिकन के कई नेता ऐसे भी हैं, जो खुल कर ट्रंप के समर्थन में सामने आ गए हैं। जनमत सर्वेक्षणों से भी सामने आया है कि रिपब्लिकन समर्थक मतदाताओं में ट्रंप की लोकप्रियता का ऊंचा स्तर बना हुआ है। वॉल स्ट्रीट जर्नल की तरफ से बीते अक्टूबर में कराए गए एक सर्वे में 93 प्रतिशत रिपब्लिकन समर्थक मतदाताओं ने राष्ट्रपति के रूप में ट्रंप के कामकाज की तारीफ की थी। ट्रंप की उम्मीदवारी की घोषणा के बाद हुए सर्वेक्षणों से इस नतीजे की पुष्टि हुई है। सर्वेक्षणों के मुताबिक रिपब्लिकन समर्थकों मतदाताओं के बीच रॉन डिसैंटिस की तुलना में ट्रंप अधिक लोकप्रिय हैं। इसके बावजूद रिपब्लिकन पार्टी को चंदा देने वाली कई कंपनियां ट्रंप से किनारा करती दिख रही हैं। लेकिन ट्रंप आम धारणा को झुठलाने वाले नेता रहे हैं। 2016 में भी उनकी जीत की संभावना किसी ने नहीं जताई थी। लेकिन उन्होंने साबित किया कि वे अमेरिका में जड़ जमा चुकी एक परिघटना की नुमाइंदगी करते हैं। ऐसे में वे एक बार फिर कही जा रही तमाम बातों को झूठला दें, तो उस पर इस बार किसी को आश्चर्य नहीं होगा।

अहोम राजवंश : पूर्वोत्तर का शिवाजी

अत्यंत साहसी और दृढ़ अहोम सेना अंततरू मुगलों को सराईघाट के पानी में वापस धकेलने में सक्षम हो गई थी, जहां उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ा। उन्होंने जल्द ही आत्मसमर्पण कर दिया और असम व दक्षिण–पूर्व एशिया सहित पूरा उत्तर–पूर्वी क्षेत्र हमेशा के लिए मुगल खतरे से मुक्त हो गया था। असम के लोगों की लोकप्रिय सामाजिक और सांस्कृतिक कल्पना में लाचित बरफुकन का नाम अंकित हो गया...

डॉ. अंकिता दत्ता

यह कहानी है वर्ष 1671 के मार्च के महीने की जब लगभग पूरे देश पर बाहरी आक्रांताओं के आक्रमण चरम पर थे। अहोम राजा स्वर्गदेव चक्रध्वज सिंघा बर्बर आक्रमणकारियों के हाथों अपने पूर्ववर्ती राजा जयध्वज सिंघ की अपमानजनक हार के बाद अहोम शिविर में नवीनतम घटनाओं की जानकारी के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। बाहरी खतरों और आक्रमणकारियों को सफलतापूर्वक दूर रखकर अहोम वंश ने लगभग चार शताब्दियों तक ब्रह्मपुत्र घाटी पर निर्विवाद शासन किया। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अहोम राजवंश सम्राट शाहजहां के साथ सीधे संघर्ष में शुरू कर रहा था। कोच और कमता राज्य पश्चिम में मुगल और पूर्व में अहोम के बीच मध्यस्थ शक्ति की तरह थे। मुगलों ने कोच साम्राज्य पर हमले करके क्षेत्र का तत्काल विलय करना शुरू कर दिया। एक तरफ अहोम और दूसरी तरफ मुगलों के बीच अब अंतहीन सैन्य संघर्ष शुरू हो गया था। अहोम साम्राज्य पर मुगलों द्वारा सत्रह बार हमले किये गए। लेकिन मुगल यहां तलवार के बल पर अपना शासन स्थापित करने में कभी सफल नहीं हो सके। अहोम साम्राज्य के खोए हुए क्षेत्रों को लड़कर पुनरू प्राप्त करने के लिए अपनी सेना को पुनर्गठित कर पाते, इससे पहले आक्रमणकारियों के हाथों हार के दुरूख और अपमान ने जयध्वज सिंघा का जीवन छीन लिया। इसलिए अहोम साम्राज्य की खोई प्रतिष्ठा बहाल करने के लिए चक्रध्वज पूरी कोशिश कर रहे थे। भूमि पर लडने में मुगल सैनिक पारंगत थे, दूसरी ओर अहोम सैनिकों ने इस क्षेत्र के जल–निकायों के माध्यम से दुश्मन को भगाने में अपने पारंपरिक ज्ञान का सबसे अच्छा उपयोग किया। चक्रध्वज सिंघ शुरू में उलझन में थे कि मुगलों के खिलाफ अहोम सेना का नेतृत्व करने के लिए किसे प्रभारी बनाया जाए। अंततरू वे अहोम सेना के एक युवा सैनिक पर केंद्रित हो गए। युवा सैनिक के पास न केवल दुश्मन से लडने के लिए अच्छी काया थी बल्कि वह युद्ध की रणनीति में भी अच्छी तरह अनुभवी था। वह थे लाचित बरफुकन। लाचित गुरिल्ला युद्ध में अच्छी तरह प्रशिक्षित थे और अतीत में सफल लड़ाइयों का नेतृत्व कर चुके थे। दुश्मन को शिकस्त देने के उनके जुनून ने उन्हें राजा चक्रध्वज सिंघ के लिए एकदम सही विकल्प बना दिया था। मुगलों के साथ आगे की लड़ाई की तैयारियों के संबंध में लाचित के पास पहले से ही तैयार योजना थी। मुगलों को पहले जमीन पर करारी हार चखा कर विशाल ब्रह्मपुत्र नदी के पानी की ओर मोडना था, जहां से वे कभी अहोम साम्राज्य में कदम रखने की हिम्मत नहीं कर सकें। मुगल पहले ही गुवाहाटी में भूमि के एक बड़े हिस्से पर अपने स्वामित्व का दावा कर चुके थे। लाचित के तहत अहोम सेना के लिए यह जीवन–मृत्यु की स्थिति बन गई थी। लड़ाई से कुछ दिन पहले तेज बुखार और शारीरिक कमजोरी से लाचित पीडिघ्त हो गए थे। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपने सैनिकों को निर्देश जारी किए कि जब तक युद्ध की तैयारियां पूरी नहीं हो जातीं तब तक बिल्कुल न सोएं। लचित ने पहले ही उन्हें युद्ध की विभिन्न रणनीतियों के बारे में समझा दिया था ताकि मुगलों को जमीन पर सफलतापूर्वक हराने के बाद ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे की ओर ध ाकेला जा सके। सेना को तद्नुसार मुगलों को ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट पर स्थित सराईघाट नामक स्थान की ओर ले जाने के लिए निर्देशित किया गया। सराईघाट की अनूठी भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए लाचित ने यह निर्णय लिया। ब्रह्मपुत्र अत्यंत चौड़ी नदी है जो सराईघाट में संकीर्ण हो जाती है। इसलिए अहोम की नौसेना की रक्षा के लिए स्वाभाविक रूप से सराईघाट आदर्श और उपयुक्त स्थान था। मतलब यह कि ब्रह्मपुत्र की चौड़ाई ने अहोम सेना को दुश्मन के जहाजों पर नजर रखने और गुरिल्ला हमलों के साथ उन्हें आश्चर्यचकित करने के लिए सबसे लाभप्रद स्थान प्रदान किया था। सराईघाट की प्रसिद्ध लड़ाई (1671) भारतीय इतिहास में उल्लेखनीय है क्योंकि यह एकमात्र नौसैनिक युद्ध था जो नदी के तट पर लड़ा गया था। अत्यंत साहसी और दृढ़ अहोम सेना अंततरू मुगलों को सराईघाट के पानी में वापस धकेलने में सक्षम हो गई थी, जहां उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ा। उन्होंने जल्द ही आत्मसमर्पण कर दिया और असम व दक्षिण–पूर्व एशिया सहित पूरा उत्तर–पूर्वी क्षेत्र हमेशा के लिए मुगल खतरे से मुक्त हो गया था। असम के लोगों की लोकप्रिय सामाजिक और सांस्कृतिक कल्पना में लाचित बरफुकन का नाम अंकित हो गया।

आईपीसीसी की यह रिपोर्ट ऐसे समय आई थी, जब 6 नवम्बर 2022 से मिस्त्र के शर्म अल–शेख में जलवायु शिखर सम्मेलन शुरू होने जा रहा था, लेकिन इस सम्मेलन की सबसे बड़ी कमजोरी यह रही कि इसमें रूस–यूक्रेन युद्ध को रोकने और रूस द्वारा बंद कर दी गई गैस प्रदायगी को फिर से चालू करने की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठा पाई। तय है, बंद पड़े कोयले से चलने वाले विद्युत ताप घर शुरू हो ...

रूस–यूक्रेन युद्ध : कोयला से ऊर्जा उत्पादन बना मजबूरी

प्रमोद भार्गव

धरती पर रहने वाले जीव–जगत पर करीब दो दशक से जलवायु परिवर्तन की तलवार लटकी हुई है। मनुष्य और इसके बीच की दूरी निरंतर कम हो रही है। पर्यावरण विज्ञानियों ने बहुत पहले जान लिया था कि औद्योगिक विकास से उत्सर्जित कार्बन और शहरी विकास से घटते जंगल से वायुमंडल का तपमान बढ़ रहा है, जो पृथ्वी के लिए घातक है। इस सदी के अंत तक पृथ्वी की गर्मी 2.7 प्रतिशत बढ़ जाएगी, नतीजतन पृथ्वीवासियों को भारी तबाही का सामना करना पड़ेगा। इस मानव निर्मित वैश्विक आपदा से निपटने के लिए प्रतिवर्ष एक अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन जिसे कांफ्रेंस ऑफ पार्टीज (सीओपी) के नाम से भी जाना जाता है। इस बार सीओपी की 27वीं बैठक मिस्त्र के शर्म अल–शेख शहर में संपन्न हुई। सम्मेलन में बहुत कुछ नया नहीं हुआ। लगभग पुरानी बातें हीं दोहराई गई। पेरिस समझौते के तहत वायुमंडल का तापमान औसतन 1.5 डिग्री सेल्सियस से कम रखने के प्रयास के प्रति भागीदार देशों ने वचनबद्धता भी जताई, लेकिन वास्तव में अभी तक 56 देशों ने संयुक्त राष्ट्र के मानदंडों के अनुसार पर्यावरण सुधार की घोषणा की है। इनमें यूरोपीय संघ, अमेरिका, चीन, जापान और भारत भी शामिल है, लेकिन रूस और यूक्रेन युद्ध के चलते नहीं लगता कि कार्बन उत्सर्जन पर नियंत्रण के लिए नवीकरणीय ऊर्जा को जो बढ़ावा दिया जा रहा है, वह स्थिर रह पाएगा। क्योंकि जिन देशों ने वचनबद्धता निभाते हुए कोयला से ऊर्जा उत्सर्जन के जो संयंत्र बंद कर दिए थे, उन्हें रूस द्वारा गैस देना बंद कर देने के कारण फिर से चालू करने की तैयारी कर रहे हैं। 2018 का ऐसा वर्ष था, जब भारत और चीन में कोयले से बिजली उत्पादन में कमी दर्ज की गई थी। नतीजतन भारत पहली बार इस वर्ष के श्जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक्य में शीर्ष दस देशों में शामिल हुआ है। वहीं अमेरिका सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले देशों में शामिल हुआ था। स्पेन की राजधानी मैड्रिड में श्कॉप 25य जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में यह रिपोर्ट जारी की गई थी। रिपोर्ट के अनुसार 57 उच्च कॉर्बन उत्सर्जन वाले देशों में से 31 में उत्सर्जन का स्तर कम होने के रु झान इस रिपोर्ट में दर्ज थे। इन्हीं देशों से 90 प्रतिशत कॉर्बन का उत्सर्जन होता रहा है। इस सूचकांक ने तय किया था कि कोयले की खपत में कमी सहित कार्बन उत्सर्जन में वैश्विक बदलाव दिखाई देने लगे हैं। इस सूचकांक में चीन में भी मामूली सुधार हुआ था। नतीजतन वह तीसवें स्थान पर रहा है। जी–20 देशों में ब्रिटेन सातवें और भारत को नवीं उच्च श्रेणी हासिल हुई है, जबकि आस्ट्रेलिया 61 और सऊदी अरब 56वें क्रम पर हैं। अमेरिका खराब प्रदर्शन करने वाले देशों में इसलिए आ गया है, क्योंकि उसने जलवायु परिवर्तन की खिल्ली उड़ाते हुए इस समझौते से बाहर आने का निर्णय ले लिया था। इसलिए कॉर्बन उत्सर्जन पर उसने कोई प्रयास ही नहीं किए, परंतु रूस के यूक्रेन पर नौ माह से चले आ रहे हमले के नतीजतन ऊर्जा उत्पादन एक बार फिर से कोयले पर निर्भरता की ओर बढ़ रहा है। दुनिया की लगभग 37 प्रतिशत बिजली का निर्माण थर्मल पावरों में किया जाता है। इन संयंत्रों की भट्टी में कोयले को झोंका जाता है, तब कहीं जाकर बिजली का उत्पादन होता है। ब्रिटेन में हुई पहली औद्योगिक क्रांति में कोयले का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। नवम्बर 2021 में ग्लासगो में हुए वैश्विक सम्मेलन में तय हुआ था कि 2030 तक विकसित देश और 2040 तक विकासशील देश ऊर्जा उत्पादन में कोयले का प्रयोग बंद कर देंगे। यानी 2040 के बाद थर्मल पावर अर्थात ताप विद्युत संयंत्रों में कोयले से बिजली का उत्पादन पूरी तरह बंद हो जाएगा। तब भारत–चीन ने पूरी तरह कोयले पर बिजली उत्पादन पर असहमति जताई थी, लेकिन 40 देशों ने कोयले से पल्ला झाड़ लेने का भरोसा दिया था। 20 देशों ने विश्वास जताया था कि 2022 के अंत तक कोयले से बिजली बनाने वाले संयंत्रों को बंद कर दिया जाएगा। आस्ट्रेलिया के सबसे बड़े कोयला उत्पादक व निर्यातक रियो टिंटो ने अपनी 80 प्रतिशत कोयले की खदानें बेच दीं थीं, क्योंकि भविष्य में कोयले से बिजली उत्पादन बंद होने के अनुमान लगा लिए गए थे। भारतीय व्यापारी गौतम अडानी ने इस अवसर का लाभ उठाया और अडानी ने श्आस्ट्रेलिया कोल कंपनीच्य बनाकर आस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड क्षेत्र में कोयला खदानें भी हासिल कर लीं। अडानी ने कारमिकेल कोयला खदान पर पर्यावरण संबंध ी मंजूरी मिलने के बाद 2019 से कोयले का खनन शुरू कर इसे बेचना भी आरंभ कर दिया है। इसी साल फरवरी में जब भारत में कोयले का संकट खड़ा हुआ था, तब आस्ट्रेलिया से ही भारत की सबसे बड़ी बिजली उत्पादक कंपनी एनटीपीसी ने कोयला खरीदा था। दूसरी तरफ, कोयले की खपत बिजली उत्पादन के लिए बढ़ेगी तो कार्बन उत्सर्जन भी बढ़ेगा। अतएव धरती के तापमान में वृद्धि भी बढ़ेगी। इन बदलते हालातों में हमें जिंदा रहना है तो जिंदगी जीने की शैली को भी बदलना होगा। हर हाल में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती करनी होगी। यदि तापमान में वृद्धि को पूर्व औद्योगिक काल के स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक तक सीमित करना है तो कार्बन उत्सर्जन में 43 प्रतिशत कमी लानी होगी। आईपीसीसी ने 1850–1900 की अवधि को पूर्व औद्योगिक वर्ष के रूप में रंखांकित किया हुआ है। इसे ही बढ़ते औसत वैश्विक तापमान की तुलना के आधार के रूप में लिया जाता है। इसी सिलसिले में जलवायु परिवर्तन से संबंधित संयुक्त राष्ट्र की अंतर–सरकारी समिति की ताजा रिपोर्ट के अनुसार सभी देश यदि जलवायु बदलाव के सिलसिले में हुई क्योटो–संधि का पालन करते हैं, तब भी वैश्विक ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में 2010 के स्तर की तुलना में 2030 तक 10.6 प्रतिशत तक की वृद्धि होगी। नतीजतन तापमान भी 1.5 से ऊपर जाने की आषंका बढ़ गई है। आईपीसीसी की यह रिपोर्ट ऐसे समय आई थी, जब 6 नवम्बर 2022 से मिस्त्र के शर्म अल–शेख में जलवायु शिखर सम्मेलन शुरू होने जा रहा था, लेकिन इस सम्मेलन की सबसे बड़ी कमजोरी यह रही कि इसमें रूस–यूक्रेन युद्ध को रोकने और रूस द्वारा बंद कर दी गई गैस प्रदायगी को फिर से चालू करने की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठा पाई। तय है, बंद पड़े कोयले से चलने वाले विद्युत ताप घर शुरू हो गए तो पृथ्वी को आग का गोला बनने से रोकना मुश्किल होगा?

अगर व्यक्ति का उद्देश्य श्रेष्ठ हो तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है: कौशल

सीतापुर। अगर व्यक्ति का उद्देश्य श्रेष्ठ है। अपने उद्देश्य लक्ष्य के प्रति व्यक्ति गर संकल्पित है, तो व निश्चित तौर पर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लता है। यह उदाहरण डाक्टर केशव बलिराम हेडेगवार ने करके दिखाया। यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अवध ा प्रांत प्रचारक कौशल ने शिवाजी शाखा के वार्षिकोत्सव को संबोधि ात करते हुए गुरुकृपा गेस्ट हाउस सीतापुर में कही। उन्होंने कहा डाक्टर साहब की आर्थिक स्थित ठीक नहीं थी। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं और संकल्प भारत के हिंदू समाज को एकत्र करना। यह करने के लिए संघ की स्थापना की। राजा साहब ने पूछा इस कार्य को करने के लिए पैसे की जरूरत होती है, कहां से लाओगे। तो डाक्टर साहब ने कहा यह गुरु दक्षिणा से आएगा। गुरु दक्षिणा कितनी हुई चौरासी रुपया अट्ठासी पैसा। इतने में पूरे भारत में संगठन कैसे खड़ा हो जाएगा। प्रवास के लिए, कार्यक्रम आदि के लिए धन की आवश्यकता होगी। आप ऐसा करो मुझसे धन ले लो। आप काम करो कार्य विस्तार करो। डाक्टर साहब ने कहा मुझे संगठन के लिए धन की नहीं आप की जरूरत है। उनका उद्देश्य श्रेष्ठ था इसलिए लक्ष्य पूरा हुआ। संगठन 15 वर्षों में 1940 तक पूरे भारत में फैल गया।

जब 1940 में संघ शिक्षा वर्ग लगा तो सभी प्रदेशों के स्वयंसेवक शामिल हुए। 1940 तक कोई भी ऐसा नहीं था जो संघ को जानता न हो। संघ को जानने समझने के लिए लोगों में जिज्ञासा होने लगी। 1934 नौ वर्ष के संगठन का शिक्षा वर्ग वर्धा में लगा था। उसमें महात्मा गांधी आए। वह हरिजन सेवा बस्ती में काम कर रहे थे। उन्होंने सोचा कि संघ में छुआछूत तो नहीं है इस बात को जानने के लिए वह वर्ग में आए थे। डाक्टर साहब उस समय वहां नहीं थे, जब वापस आए तो पता चला कि गांधी जी आए थे। वह उनसे मिलने गए, कई घंटे तक बातचीत हुई। डा. भीमराव अंबेडकर भी संघ के शिक्षा वर्ग में आए। उन्होंने भी संघ के कार्यों की सराहना की। आज संघ का यह स्वरूप पहुंचा है। शाखा के वार्षिकोत्सव में सभी आए अच्छा लगा। स्वयंसेवकों का उद्देश्य होना चाहिए भले ही सभी शाखा में न आ सकें लेकिन हम अपने क्षेत्र के प्रत्येक घर से अपना संपर्क रखेंगे। कार्यक्रम के पश्चात् सरस्वती शिशु मंदिर में वृक्षारोपण किया गया। इस मौके पर नगर संघ चालक विनय, कार्यक्रम अध्यक्ष समाजसेवी अंब्रीश सिन्हा, विभाग प्रचारक बैरिस्टर, विभाग कार्यवाह कृष्ण कुमार, जिला प्रचारक उपेंद्र, नगर प्रचारक कमलेश, मुख्य शिक्षक संतोष, जिलाध्यक्ष भारत तिब्बत सहयोग मंच एड. प्रभात अग्निहोत्री, उदित, नत्थू लाल, सहित अन्य स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

श्रद्धालुओं के द्वारा निकाली गई कलश यात्रा रुद्र महायज्ञ एवं रासलीला का प्रारंभ

सीतापुर। क्षेत्र के बाबा अचूकनाथ अर्थाना में कलश यात्रा निकाले जाने के साथ .रुद्र महायज्ञ एवं रासलीला का शुभारंभ हो गया। सप्त दिवसीय कार्यक्रम में रुद्र महायज्ञ, कथा, एवं रासलीला का मंचन किया जाएगा। बाबा अचूकनाथ धाम अर्थाना से रवाना हुई। कलश यात्रा नागेश्वर धाम रामकोट, रामेश्वरम धाम रामकोट होते हुए दधीचि कुंड मिश्रिख पहुंची। जहां सभी मातृ शक्तियों द्वारा जल भरा गया। पुनः कलश यात्रा कार्यक्रम स्थल के लिए रवाना हुई और यज्ञ स्थल में कलश स्थापना की गई। यज्ञ आचार्य श्री दुर्गेश शास्त्री ने बताया कि 25 नवंबर को वेदी रचना मंडप प्रवेश 26 नवंबर को अग्नि प्राकट्य तत्पश्चात हवन पूजन एवं 30 नवंबर को पूर्णाहुति, कन्या पूजन व विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा। साथ ही साथ 24 से 30 नवंबर तक रासलीला का मंचन भी होगा। इस अवसर पर कार्यक्रम अध्यक्ष पवन आनंद फलाहारी बाबा जी मोनू बाबा, कुंजबिहारी मिश्र, विवेक शुक्ला, नवनीत, जीतेन्द्र, संदीप, केसरिया हिंदू वाहिनी गौ रक्षा प्रकोष्ठ के विधानसभा उपाध्यक्ष हिमांशु पांडे, अशोक बाजपेयी, अखिलेश बाजपेयी, देवी सहाय, केसरिया हिंदू युवा मोर्चा मंडल महामंत्री श्याम मिश्रा, सूर्यकांत, पार्थ संपूर्ण मंदिर समिति एवं काफी संख्या में भक्तों का जनसैलाब उपस्थित रहा।

चोरों ने साठ हजार का माल किया पार

मानपुर (सीतापुर)। इलाके में बीती रात अज्ञात चोर दीवार फांदकर घर में घुस गये। घर में रखे जेवर पर चोरों ने हाथ साफ कर दिया। जाते जाते चोरों ने घर का मुख्य दरवाजा बाहर से बंद कर दिया। सुबह जानकारी होने पर गृहस्वामी ने पुलिस को जानकारी दी। मरसंडा निवासी अरविंद गौतम ने बताया . रात में चोर दीवार फांदकर घर में घुस आए। बक्से में रखा जेवर मंगल सूत्र, कान के झाला, पायल, बिछिया व सरसों सहित करीब साठ हजार का माल पार कर दिया। चोरों ने घर के मुख्य दरवाजे को बाहर से बंद कर दिया। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर मामले की जांच पड़ताल की है।

पांच किसानों को वितरण किया गया निःशुल्क बीज

रेउसा (सीतापुर)। रेउसा। ब्लॉक मुख्यालय पर बाढ़ व कटान प्रभावित क्षेत्र के पांच सौ किसानों को निःशुल्क बीज वितरण कार्यक्रम किया गया। मुख्य अतिथि विधायक ज्ञान तिवारी रहे। ब्लॉक का एक नजारा ऐसा था राम नाम की लूट है लूट सके सो लूट ले जैसे कहावत सही साबित हुई। कार्यक्रम असफल हो रहा अव्यवस्थाओं का बोलबाला रहा। बीज वितरण के दौरान मिटिंग हाल महिला एवं ग्रामीणों से फुल था। ब्लाक परिसर की पूरी फील्ड में हजारों की संख्या में ग्रामीण में मौजूद थे। करीब तीन घंटा तक मीटिंग हॉल बंदकर विध ायक ज्ञान तिवारी द्वारा बीज वितरण कार्यक्रम किया गया। गेट खुलते ही मीटिंग हॉल में एक दूसरे के ऊपर गिर रहे थे। महिला एवं ग्रामीण अफरा–तफरी का माहौल बना हुआ था। पुलिस व्यवस्था नाम मात्र रही मीटिंग हॉल का गेट खुलते ही भीड़ में पुलिसकर्मी के साथ विधायक भी फस गए। जैसे तैसे पुलिस कर्मियों द्वारा विधायक ज्ञान तिवारी को भीड़ से बाहर निकाला गया। वहीं पुलिस ने भीड़ को रोकने में नाकाम साबित हो रही। एक दूसरे के ऊपर ग्रामीण महिलाएं गिर रही थी। इस तरह से निशुल्क बीज वेतन कार्यक्रम किया गया। जो कि किसी अनहोनी का कारण बन सकता था घोर लापरवाही शासन–प्रशासन की रही वितरण करने से पहले व्यवस्था करना सुरक्षित नहीं समझा गया जिसका खामियाजा ग्रामीणों को उठाना पड़ा। पिंकी गौलोक कोडर राजू खरौहा, साकिल, फरर बैजनाथ, पर्सपुर गोविंद, राजेश, बिनोद, सत्रोहन, सुंदर, बिटाना, मधुबनी, गीता, रानी, गुडिया, रामदेवी, स्माइल, रामचंद्र, छोटेलाल, गोकर्ण, बिंद्रा प्रसाद, जोगेंद्र, नरेंद्र कुमार, विजयपाल आदि ग्रामीणों ने बताया निःशुल्क बीज वितरण कार्यक्रम कैसा है। यहां तो ग्रामीणों छीना झपटी कर रहे हैं एक दूसरे के ऊपर गिर रहे हैं। मितवा करने के लिए वितरण करने के लिए सूची बनाकर प्रत्येक व्यक्ति को बुलाकर देना चाहिए या पुलिस व्यवस्था भी होनी चाहिए। ऐसा कुछ नहीं दिखाई दिया दो पुलिसकर्मी हजारों की भीड़ की संख्या को क्या रोक पाएंगे। वितरण करने के लिए 3 घंटे तक मीटिंग हॉल बंद रहा गेट खुलते ही लाही मसूर के बीज पर लूट पड़ गई। जो कोई पाया वह लूट कर ले जा रहा था। बोरिया ही छुटपुट ग्रामीणों के बीच बीज पाने को लेकर गाली गलौज धक्का–मुक्की मारपीट तक हो गई। जिसका कारण घोर लापरवाही रही अगर इसी जगह पर पुलिस व्यवस्था पहले से कर ली जाती तो इस तरह का कोई नौबत ही नहीं आती। इस दौरान नन्नू, प्रेम कुमार, जगदीश, सुरेंद्र कुमार, रामविजय, जगजीवन, राम बालक, राम प्रेमा देवी, राजकुमारी आदि महिलाएं व ग्रामीण चोटिल भी हो गये। प्रत्येक किसान को निःशुल्क लाही एक पैकेट दो किलो मसूर एक पैकेट पांच किलो बीज दिया गया है।

इस अवसर पर खंड विकास अधिकारी रजनीश शुक्ला, एडीओ पंचायत सहायक विनोद यादव, एडीओ एजी उदय भान वर्मा, राजेंद्र तिवारी, रामेंद्र शुक्ला, विजय अवस्थी, बिहारी अवस्थी सहित राजकीय बीज भंडार कर्मचारी मौजूद रहे।

चोरी की प्लानिंग बनाते हुए 12 अभियुक्तों को पकड़ा

नैमिषारण्य (सीतापुर)। स्थानीय पुलिस ने सघन चेकिंग अभियान के दौरान दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। जानकारी के मुताबिक चोरी की योजना बनाते समय पकड़ लिया गया। पकड़े गए आरोपियों के पास से चोरी करने वाले यंत्र व औजार बरामद किये गये। आरोपी कुलदीप गौतम पुत्र बुलाकी गौतम निवास रौतापुर मजरा औरंगाबाद तथा जगदीश राजवंशी पुत्र लोटन निवासी कमईपुर को उनके विरूद्ध पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर विधि ाक कार्यवाही की है। एसआई जयकृष्ण तिवारी व सहयोगी पुलिस कर्मी के साथ चेकिंग दौरान पकड़ कर मुकदमा पंजीकृत किया है।

ट्रक बाड़ी रिपेयरिंग की दुकान से लाखों की चोरी

सिधौली (सीतापुर)। कोतवाली कस्बा के सटे अहमदपुर जट गांव स्थित हाइवे पर एक वाहन रिपेयरिंग की दुकान से बीती रात अज्ञात चोरों ने धावा बोलकर लाखों रुपये का सामान चोरी कर फरार हो गए। दुकान मालिक के अनुसार दो लाख रुपये की कीमत का सामान चोर चुरा ले गये। पुलिस ने तहरीर के आधार पर जांच शुरू कर दी है। कल्लू पुत्र झब्बन निवासी अलादादपुर के अनुसार उसकी ट्रक बाड़ी रिपेयरिंग की दुकान हाइवे पर बुलट एजेंसी के निकट है। बीती रात अज्ञात चोर उसकी दुकान से रिपेयरिंग का समान जनरेटर का अल्टीनेटर सहित अन्य दो लाख तक की कीमत का सामान चोरी कर ले गये। पीड़ित द्वारा सिधौली कोतवाली में लिखित प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की गई है।

धूमधाम से निकली विश्व शांति कलश यात्रा

बिसवां नगर (सीतापुर)। कस्बे में विश्व शांति कलश यात्रा ध ूमधाम और हर्षोल्लास के साथ निकली। जो हस्तिनापुर से प्रारम्भ होकर सीतापुर बिसवां, महमूदाबाद, बाराबंकी, लखनऊ होते हुए अयोध्या पहुंचेगी। शांति यात्रा में ज्ञानमती माता के साथ सैकड़ों की तादात में श्रद्धालुगण ढोल नगाड़े बजाते झूमते नाचते सेठगज स्थित जैन मंदिर पहुंचे और पूजा अर्चना और आहार के उपरांत मंगल विहार के लिए शुक्रवार को रवाना होगी। इस मौके ताराचंद्र जैन, मनोज जैन, मन्नू जैन, राजकुमार, विजय जैन, सतीश जैन, जीवन जैन, सीमा जैन, राजू जैन, रूपल जैन, निधि जैन, कोमल जैन, रश्मि जैन, विजय जैन, मोहिनी जैन, मधु जैन, बंटी जैन, पंकज जैन, अतुल जैन, संजीव जैन, सुशील जैन, विमल जैन, संदीप जैन के अलावा सैकड़ों की तादात में जैन समाज के लोग उपस्थित रहे।

प्रत्येक समस्या का समाधान शक्ति से संभव: कौशल किशोर

हरदोई।नगर के सीएस नेहरू डिग्री कालेज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शाखा संगम कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें हरदोई नगर की सभी शाखाओं केस्वयंसेवकों ने प्रतिभाग किया।शाखा संगम कार्यक्रम में स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुऐ प्रांत प्रचारक कौशल किशोर ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दैनिक शाखा व्यक्ति एवं व्यक्तित्व निर्माण की कार्यशाला है।अच्छे लोगों का निर्माण शाखा के द्वारा होता है प्रत्येक समस्या का समाधान शक्ति के द्वारा ही संभव है संगठित समाज में शक्ति प्रवाहित होती है और उससे एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण होता है।देशभक्ति और अनुशासन वर्तमान समय में समाज की आवश्यकता है। एकता के सूत्र में संपूर्ण मानव समाज को पिरोए बिना देश को भव्य एवं दिव्य नहीं बनाया जा सकता है। संघ की शाखा में स्वयंसेवकों के भीतर साहस,समर्पण और स्वाभिमान और देशभक्ति का भाव पैदा किया जाता है।उन्होंने बताया कि नागपुर में स्वतंत्रता आन्दोलन की चर्चा 1904–1905 से शुरू हुई। साल 1897 में रानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के महोत्सव के निमित्त स्कूल में बांटी गई मिठाई 8 साल के केशव ने मिठाई ना खाकर कूड़े में फेंक दी। मित्रों ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा कि केशव मिठाई क्यों फेंक दी, तब उस बालक का उत्तर था, यह मिठाई यह रानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के प्रसन्नता में है इसमें हम भारतीय किस प्रकार से प्रसन्न हो सकते हैं।यह अंग्रेजों के प्रति उनका पहला प्रतिकार था।कौशल किशोर ने आगे कहा कि केशव बाल्यकाल से उनके मन में भारत की तरफ कुदृष्टि रखने वाले विदेशी ताकतों के प्रति विरोध की भावना थी।साल 1907 में रिस्ले सेक्युलर नाम से वंदे मातरम के सार्वजनिक उद्घोष पर पाबंदी का अन्यायपूर्ण आदेश घोषित किया गया। उसके विरोध में केशव ने अपने विद्यालय में अंग्रेज निरीक्षक के सामने अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों द्वारा वंदे मातरम का उद्घोष करवाया। प्रधानाचार्य ने सभी विद्यार्थियों से पूछा कि यह किसकी शरारत है जब किसी विद्यार्थी ने केशव का नाम नहीं बताया तो यह फैसला किया गया कि विद्यालय बंद कर दिया जाए। तब केशव ने यह सोच कर कि सभी विद्यार्थियों की पढ़ाई रुक जाएगी स्वयं आ करके बताया कि है मेरे निर्देश पर किया गया। तब केशव से माफी मांगने के लिए दबाव बनाया गया माफी मांगने से इनकार करने पर रेजिलेण्ड क्रडोक के निर्देश पर पुलिस महानिरीक्षक सीआर क्लीवलैंड की अनुशंसा पर बालक केशव को स्कूल से निष्काषित कर दिया गयास्वयंसेवकों ने दैनिकशाखाओं पर होने वाले शारीरिक कार्यक्रमों योग व्यायाम आदि का प्रदर्शन किया गया।इस मौके पर विभाग प्रचारक कौशल, विभाग संचालक शिव स्वरूप, जिला कार्यवाह संजीव, नगर प्रचारक अमरेंद्र ,नगर कार्यवाह विनय सहित सैकड़ों स्वयंसेवक मौजूद रहे।

बीएसपी पूर्व विधानसभा अध्यक्ष बिसवां मैकूलाल भारती का निधन

साण्डा (सीतापुर)। विकासखंड सकरन की ग्राम पंचायत मरोड़ के गुलरी पुरवा निवासी बीएसपी पूर्व विधानसभा अध्यक्ष मैकूलाल भारती का लंबी बीमारी के चलते हुए रात लगभग 10 निधन हो गया। जिसकी खबर क्षेत्र में आरती तरीके से फैल गई। सुबह होते ही पूर्व विधानसभा अध्यक्ष मैकूलाल भारती को देखने के लिए हजारों की संख्या में लोग पहुंच गये। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष मैकुलाल भारती नेता के साथ–साथ एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता भी थे और क्षेत्र के गरीब असहाय दबे कुचले लोगों की मदद करने के लिए हर समय तत्पर रहते थे। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष मैकूलाल भारती अपने कार्यकाल में सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय के तर्ज पर लोगों की मदद की कभी जात पात की राजनीति नहीं की। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष मैकूलाल भारती के निधन से क्षेत्र का हर वर्ग का व्यक्ति शोकाकुल है।

आधार कार्ड बनवाने व संशोधन के नाम पर हो रही अवैध वसूली जारी

हरपालपुर,हरदोई।अरवल थाना क्षेत्र के बेहथर गांव निवासी भारतीय किसान मजदूर यूनियन के जिला अध्यक्ष प्रमोद सिंह ने उप जिला अधिकारी सवायजपुर को 5 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा है।उप जिला अधिकारी सवायजपुर राकेश सिंह को भारतीय किसान मजदूर यूनियन दशहरी के जिला अध्यक्ष प्रमोद सिंह ने दिए गए ज्ञापन में बताया है कि सवायजपुर क्षेत्र में आवारा गोंवंशो को पकड़ा कर आश्रम स्थल में भेजा जाए, प्राथमिक विद्यालय बेहथर से गंभीरी नदी तक चकरोड पर अवैध कब्जा मुक्त कराकर मिटटी कार्य कराया जाए।ग्राम पंचायत बेहथर ब्लाक सांडी में मुख्य मार्ग से मान सिंह के मकान तक नाली खड़ंजा का निर्माण कराया जाए। हरपालपुर के पोस्ट ऑफिस में आधार कार्ड बनवाने एवं संशोधन के नाम पर हो रही अवैध वसूली को बंद कराया जाए।हरपालपुर से हरदोई मार्ग पर निजी बसों द्वारा यात्रियों से अधिक किराया वसूला जा रहा है जिस पर तत्काल रोक लगाई जाए। 5 सूत्रीय ज्ञापन उप जिला अधिकारी को सौंपा है।

किसानों की समस्याओं को लेकर कांग्रेस का जोरदार प्रदर्शन

हरदोई।भारत जोड़ो यात्रा के माध्यम से जहां राहुल गांधी जान फूंकने का काम कर रहे हैं वही हरदोई में कांग्रेसी भारत जोड़ो यात्रा के जरिए खुद को सक्रिय दिखाने की कोशिश में लगे हुए हैं।डीएपी की कमी को देखते हुए कांग्रेसियों ने राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन जिला प्रशासन को सौंपा है।रवि की फसल की बुवाई का कार्य चल रहा है जिसमें उर्वरक डीएपी की भारी कमी से किसान परेशान हैं जिसको लेकर कांग्रेस जिला अध्यक्ष ने राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन प्रशासन को सौंपा है। ज्ञापन में उन्होंने बताया है कि प्रदेश में किसान एक–एक बोरी खाद पाने के लिए बेहाल है लेकिन प्रदेश सरकार व प्रशासन अपने दायित्व को पूरा करने में बिल्कुल नाकाम साबित हो रही है उन्होंने मांग की है कि किसानों को खाद उर्वरक की आपूर्ति की तत्काल व्यवस्था की जाए जिससे किसानों की आर्थिक और सामाजिक हितों की समस्या का समाधान किया जा सके और खरीफ की फसल बर्बाद किसान को आपके उचित निर्णय से लाभ मिलेगा इस कार्यक्रम में कांग्रेस पार्टी के जिला स्तरीय पदाधिकारियों सहित कार्यकर्ता मौजूद रहे।

हरिश्चंद्र विकलांग निराश्रित जन सेवा समिति ने नगर मजिस्ट्रेट को सौंपा मांग पत्र

हरदोई।श्री हरिश्चंद्र विकलांग वृद्धि राष्ट्रीय जन सेवा समिति के बैनर तले दर्जनों लोगों ने विभिन्न जनसमस्याओं को लेकर एक ज्ञापन नगर मजिस्ट्रेट हरदोई को सौंपा। आपको बताते चलें, हरिश्चंद्र चंद्र विकलांग वृद्धि राष्ट्रीय जन सेवा समिति समाज के दिव्यांग वृद्ध निराश्रित जनों की समस्याओं को लेकर समिति के द्वारा दिव्यांग वृद्ध निराश्रित भरण पोषण हेतु अविवाहित होने की स्थिति में पात्रता के आधार पर अंत्योदय राशन कार्ड, मौसम के अनुसार गर्म कपड़े व कंबल दिलाए जाने सहित शहर के मोहल्ला प्रगति नगर शाहाबाद के हुसैनापुरम गांव रेलवे क्रॉसिंग अव्यवस्थाओं के चलते रात में आने जाने वाले लोगों को समस्याएं हो रही हैं।

हरैया तहसील की चकबन्दी प्रक्रिया में चकबन्दी अधिकारी हरैया पर लगा भ्रष्टचार का आरोप

एम.पी. सिंह/
दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती/सिद्धार्थनगर। जहां तहसीलदार जैसे राजस्व कर्मी फर्जी अमलदरामदों को करने के लिये पहले से बदनाम है मोटी रकम लेकर फैसले बेंचने के लिये वही हालत चकबन्दी विभाग के कर्मचारियों की भी है। हरैया तहसील क्षेत्र के एक ग्रामसभा जैतापुर में बहुलक किसान चकबन्दी अधिकारी के चक परिवर्तन आदेश के चलते सड़क से सटे अपनी कीमती जमीनें बचाने के लिये महामहिम राज्यपाल तक इंसाफ की गुहार लगा चुके है।

बताया जाता है, कि चकबन्दी अधिकारी इंचार्ज हरैया तहसील द्वारा परम्परागत वर्षो की सड़क से सटे जमीनों को पैसे वाले काश्तकारो को देने के नाम पर मोटी रकम कमाई जा रही है, असल किसानों की जमीने अपने अधिकारों को दुरूपयोग करके चकबन्दी प्रक्रिया का हवाला देकर उनका नीदचौन कर दे रहे है खराब। एक तरफ रवी की बुवाई जिसमें न खाद है न बीज जैसे तैसे किसानों ने डी0ए0पी0 की जगह सिंगिल सुपरफास्ट और अलग–अलग पोटास और युरिया खरीद कर मोटे दाम देकर नैनीताल के प्रमाणित बीज गेंहू बोकर अपनी फसल बचाई उससे पहले नेपाल के पानी से किसान की धान की फसल डूब ही गयी, अब बची–खुची कसर अर्थात जो खून–पानी किसानों के शरीर में बचा है, उसे जोक बनकर यह चकबन्दी अधिकारी अपने घर को कर रहे है मालामाल।

बताया जाता है, कि सूबे के मुख्यमंत्री गुजरात चुनाव में उल्झे है, और उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के किसानों के पास न डी0ए0पी0 है, और न ही फाउण्डेशन गेंहू बीज कृषि विभाग के अधिकारी बुलेट और कार से टहल रहे है, और जांच के नाम पर खाद उर्वरक विक्रेता और बड़े उर्वरक स्टाकिस्टो से मोटी रकमें लेकर विभाग के जिम्मेदारियों से हे बेपरवाह कृषि मंत्री किसानों को दिखा रहे है, दोगुनी आय करने का सब्जबाग जो खुद पूर्वांचल के है।

किसान इतने पीड़ित हो चुके है कि भाजपा के वर्तमान कृषि मंत्री हटाकर तथा कृषि विभाग को बन्द कर उसे राजस्व विभाग में समायोजित करने की कर रहे है मांग और किसानों के लिये अलग से एक पटल बनाने की कर रहे है मांग जो समय पर किसानों को डी0ए0पी0 यूरिया, और अच्छे किस्म के गेंहू की बीज रियायत में उपलब्ध ा करावाये। पम्पिंग सेटों के दाम कम करने हेतु उस पर दी जाये, सब्सिडी दूर तक खेतों में पानी पहुंचाने के लिये जो प्लास्टिक की डिलेवरी होती है, उस पर भी सब्सिडी की कर रहे है मांग। यह मांग अभी पूरी हुई नहीं, इसी बीच जनपद–बस्ती जो मण्डल भी है, जहां मण्डलायुक्त जैसे उच्चाधिकारी भी बैठते है, वहां के चकबन्दी अधिकारियों द्वारा किसानों के साथ जैतापुर गांव के किसानों जैसा चकबन्दी प्रक्रिया में किया जा रहा है, शोषण और भ्रष्टचार। जैतापुर के किसानों ने पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश सिंह के यहां चिट्ठी भेज कर भाजपा के भ्रष्टाचार पर रोक लगाने की की गयी है गुहार।

जनपद बस्ती के हरैया तहसील में चकबन्दी प्रक्रिया चल रही है, हरैया तहसील के ग्राम पंचायत–जैतापुर में किसानों की सड़क से सटे जमीनों को दूसरे चकदारों को देकर की जा रही है, मोटी कमाई। अपील का भी मौका न देकर चक परिवर्तन के आदेश का फरमान कर रहे है चकबन्दी अधिकारी मामले पर नहीं दे रहे है ध्यान। जैतापुर के किसानों ने हरैया तहसील के चकबन्दी अधिकारी पर लगाया भ्रष्टचार का आरोप, मामले को भेजा महामहिम राज्य पाल के पास न्याय के लिये।

ग्रामीण महोत्सव के तहत किसानों के लिए आयोजित हुआ तीन दिवसीय कैम्प

बिसवा नगर (सीतापुर)। दि सेक्सरिया शुगर मिल प्रांगण में ग्रामीण महोत्सव के तहत किसानों को बैंकिंग व लोन सेवाएं देने के उद्देश्य से एचडीएफसी बैंक शाखा बिसवां द्वारा निःशुल्क तीन दिवसीय कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प का शुभारंभ शुगर मिल बिसवां के अधिशाषी अधिकारी आर0सी0सिंघल द्वारा फीता काटकर किया गया। शाखा प्रबन्धक शिव शंकर पांडेय ने बताया कि गन्ना किसानों को बैंक की सभी सुविधाओं से अवगत कराने के उद्देश्य से व कृषि संसाधनों संबंधी लोन को सरल प्रक्रिया के माध यम से एचडीएफसी बैंक उपलब्ध कराने को प्रतिबंध है। किसानों व मध्यम वर्ग के उपभोक्ताओं के लिए इस कैम्प का आयोजन किया जा रहा हैस कैंप में आने वाले सभी किसान भाइयो का बचत खाता खोला जाएगा प् इस दौरान बैंक कर्मचारी डिप्टी मैनेजर उदय प्रताप राज, कैशियर मोईन खान, लवकुश भार्गव, अतुल पांडेय, जावेद, विपिन कुमार, अमृतेश सिंह समेत तमाम ग्रामीण किसान मौजूद रहे।

हनुमान मंदिर परिसर में पुण्यतिथि पर हुआ भंडारे का आयोजन

साण्डा (सीतापुर)। किवानी नदी के तट पर स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर सांडा में सिद्ध संत श्री श्री 1008 श्री राम दास त्यागी बाबा की पुण्यतिथि पर भंडारे का आयोजन हुआ। जिसमें सर्वप्रथम त्यागी बाबा की प्रतिमा का पूजन वंदन करने के बाद आसपास क्षेत्र के आश्रमों से पधारे संतो एवं कन्याओं को भोजन कराने के पश्चात शिष्यों व सभी ग्राम वासियों ने प्रसाद ग्रहण किया। ग्रामीण गायकों की टोली रामकृष्ण, गिरजेश, लक्ष्मीकांत, राहुल, नरेश, कमलेश आदि ने भजन कीर्तन गाकर सभी संतों व ग्रामीणों को आनंदित कर दिया। भंडारे में पधारे सभी संतो को दक्षिणा देकर आदर पूर्वक विदा किया गया। आयोजन में श्री त्यागी बाबा देवस्थान समिति, बाबा हरे राम, पुजारी लालता, भग्गू बाबा, मायाराम बाबा, नत्थाराम, दिनेश मिश्रा, मोलहेराम, ज्ञानू मिश्रा, संभू अवस्थी, दिनेश गुप्ता, गंगासागर आदि सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

26 नवम्बर, 2022 को विशेष अभियान दिवस घोषित

मीरजापुर। उप जिला निर्वाचन अधिकारी शिव प्रताप शुक्ल ने एक विज्ञप्ति के माध्यम से सर्वसाधारण को जानकारी देते हुए बताया है कि भारत निर्वाचन आयोग के दिशा– निर्देश के क्रम में निर्वाचक नामावलियों का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अर्हता तिथि 1 जनवरी 2023 के आधार पर निर्वाचक नामावलियों में अपना नाम दर्ज कराने, मृतक, शिफ्टेड मतदाताओं का नाम मतदाता सूची से हटाये जाने एवं किसी भी प्रकार की प्रविष्टि में संशोधन हेतु फार्म–6, 7, 8 सम्मिलित किये जाने हेतु 26 नवम्बर, 2022 दिन शनिवार को विशेष अभियान दिवस घोषित किया गया है। उक्त दिवस पर समस्त बूथ लेविल अधिकारी समुचित फार्मों के साथ अपने–अपने बूथों पर उपस्थित रहेंगे। सभी अर्ह नागरिकों से अपील की जाती है कि वे कृपया उपरोक्त दिवस पर अपने बूथ पर जाकर मतदाता सूची का निरीक्षण कर लें, यदि किसी अर्ह मतदाता जो 1 जनवरी, 2023 को 18 वर्ष की आयु पूरी कर रहा हो अथवा उससे अधिक आयु का हो, परन्तु उसका नाम मतदाता सूची में शामिल न हो तो वह उपरोक्त दिवस पर अपने से सम्बन्धित मतदेय स्थल पर उपस्थित होकर प्रारूप–6 में आवेदन कर के अपना नाम दर्ज करवा सकता है।

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा किसानों में वितरित किया गया आलू बीज

मीरजापुर। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के साऊथ कैंपस बरकछा मीरजापुर स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र में केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, मोदीपुरम मेरठ द्वारा संचालित अनुसूचित जाति उप परियोजनान्तर्गत आलू की उन्नतिशील प्रजाति कुफरी–पुखराज का जनक बीज जनपद मीरजापुर के पटेहरा विकास खण्ड के 20 किसानों, महिलाओं में वितरित किया गया। उक्त प्रजाति 60–70 दिनों में तैयार होती है। केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. श्रीराम सिंह ने बताया कि इस प्रजाति का आलू उत्पादन करके अगले वर्ष बीज के रूप में उपयोग करेंगे। जिससे उनकी आमदनी बढेगी। कार्यक्रम में उन्हें आलू उत्पादन तकनीक का प्रशिक्षण भी केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. श्रीराम सिंह ने दिए। धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस मौके पर काफी संख्या में किसानों ने भाग लिया।

विक्षिप्त युवक का शव मिला ग्रामीणों में फैली सनसनी

मीरजापुर। ड्रमंडगंज थाना क्षेत्र के दुर्जनीपुर गांव के ओवरब्रिज के पास संदिग्ध परिस्थितियों में विक्षिप्त अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने से हड़कंप मच गया। घटना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर अग्रिम कार्रवाई में जुटी हुई है। ड्रमंडगंज थाना क्षेत्र के दुर्जनीपुर गांव में ओवरब्रिज के पास एक विक्षिप्त व्यक्ति जोकि कई दिनों से घूम रहा था, जहां गंभीर बीमारी से ग्रसित था। ऐसे में अज्ञात व्यक्ति का शव दुर्जनीपुर ओवर ब्रिज के पास मिला। घटना की जानकारी आस–पास के लोगों सुचना ग्राम प्रधान को दिया। मौके पर पहुंचे ग्राम प्रधान ने इसकी जानकारी पुलिस को दी सूचना के बाद मौके पर पहुंचे उपनिरीक्षक कमलेश सिंह यादव ने शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त कराने की कार्रवाई में जुट गए। लेकिन काफी मशक्कत के बाद भी विक्षिप्त युवक का शिनाख्त नहीं हो पाया था।

संदिग्ध परिस्थितियों में अधेड़ कि मौत

मीरजापुर। कछवा थाना क्षेत्र के बरैनी सेमरी चौराहे के पास बरैनी बींद बस्ती के भाने बिंद पुत्र मीठाई लाल बींद 42 वर्ष नामक अधेड़ ब्यक्ती का सड़क के किनारे रात में शव पडाध मिला। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंचे थानाध्यक्ष रामस्वरूप वर्मा लाश को कब्जे में लेकर को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घरवालों ने गांव के ही एक व्यक्ति पर मारकर फेंकने का आरोप लगाया। बरैनी गांव निवासी मृतक भाने बींद पुत्र मिठाई लाल बिंद व पड़ोस में ही रहने वाला ट्रैकर ड्राइवर शीतला प्रसाद बिंद दोनों रात में 10रू40 बजे गांव के ही विष्णु सिंह के खेत में से धान कटवा कर घर पहुंचाया। घर पहुंचा कर वापस अपने घर चला गया। 11रू20 बजे रात्रि में पुनः शीतला बींद विष्णु सिंह के घर आया और बताया कि बस्ती के मोड़ भाने गीर गया है चल कर देख लिजिए यह वाकिया विष्णु सिंह के घर पर लगे सीसीटीवी फुटेज में देखा गया। लेकिन मृतक भाने के साथ आएं शीतला घर पर टैक्टर खड़ी करके गायब है। बिंद बस्ती के लोगों ने सुबह थाने में आकर घंटों हंगामा किया। उनका आरोप था कि भाने को मारकर सड़क किनारे फेंक दिया गया है। दूसरी ओर थानाध्यक्ष रामस्वरूप वर्मा ने बताया कि पोस्टमार्टम के बाद जो भी सच्चाई सामने आएगी उसी हिसाब से एफआईआर दर्ज किया जाएगा प्रथम सूचना के आधार पर एनसीआर दर्ज कर लिया गया है।

अवैध पार्किंग पर निगम ने की रोडवेज की आठ बसे जब्त

सहारनपुर। जीपीओ रोड पर बसों की अवैध पार्किंग करने पर नगर निगम ने बृस्पतिवार को रोडवेज की आठ बसों को जब्त कर लिया। निगम ने रोडवेज पर अवैध पार्किंग के लिए 17 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया था। स्मार्ट सिटी के तहत जीपीओ रोड पर नाला निर्माण का कार्य कराया जा रहा है। जिसकी खुदाई कर मिट्टी सड़क किनारे डाली जा रही है। उध ार रोडवेज बसे पिछले कुछ दिनों से जीपीओ रोड पर अवैध रुप से पार्क की जा रही है जिससे वहां जाम की स्थिति बनी रहती है। नगरायुक्त, अपर नगरायुक्त तथा प्रवर्तन दल प्रभारी आर एम रोडवेज को इस स्थिति से अवगत कराते हुए पिछले एक सप्ताह में कई बार बात कर चुके है। निगम अधिकारियों का सुझाव था कि अतिरिक्त बसे वर्कशॉप में खड़ी करायी जाएं और आवश्यकतानुसार उन्हें बस स्टैंड पर लाया जाए ताकि जीपीओ रोड पर जाम लगने से लोगों को परेशानी न हो, लेकिन रोडवेज अधिकारियों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। जीपीओ रोड पर बसों की अवैध पार्किंग से लगते जाम और जनता को लगातार हो रही परेशानी को देखते हुए नगर निगम ने रोडवेज के खिलाफ सख्त कदम उठाते हुए अवैध रुप से पार्क की गयी 17 रोडवेज बसों पर 17 हजार रुपये का जुर्माना लगाया था। लेकिन इससे भी रोडवेज अधिकारियों के कान पर जूं नहीं रेंगी और आज फिर बसों को जीपीओ रोड पर पार्क किया गया। नगरायुक्त गजल भारद्वाज के आदेश पर अपर नगरायुक्त राजेश यादव, सहायक नगरायुक्त अशोक प्रिय गौतम, अधि ाशासी अभियंता अमरेन्द्र गौतम, प्रवर्तन दल प्रभारी कर्नल बी एस नेगी के साथ जीपीओ रोड पहुंचे और वहां अवैध रुप से पार्क की गयी आठ बसों को जब्त कर निगम के गैराज में खड़ा कर लिया।

नदी में कूड़ा डालने वाले 15 लोगों पर 14600 जुर्माना

सहारनपुर। नगर निगम द्वारा पांवधोई नदी का सफाई अभियान लगातार जारी है और नदी से शिल्ट निकालने का काम किया जा रहा है। उधर नदी में कूड़ा डालने वाले लोगों पर सख्ती बरतते हुए निगम ने गत दो दिनों में एक दर्जन से ज्यादा लोगों पर साढेध 14 हजार रुपये जुर्माना भी लगाया है। नगरायुक्त गजल भारद्वाज के निर्देश पर गत 9 नवम्बर से शुरु किया गया पांवधोई सफाई अभियान निरंतर जारी है। ध ोबी घाट से पुल दालमण्डी तक सफाई का एक चरण पूरा करने के बाद धोबीघाट से सफाई का दूसरा चरण शुरु किया गया है। सहायक नगरायुक्त अशोक प्रिय गौतम ने बताया कि पहले चरण में नदी में डाला गया कचरा व पॉलीथिन तथा किनारों पर खड़ी घास तथा पेड़ों की कटाई–छंटाई आदि की गयी थी। दूसरे चरण में नदी से शिल्ट निकालने का कार्य किया जा रहा है। धोबीघाट व पुल खुमरान के बीच नदी के एक बड़ा हिस्सा साफ किया जा चुका है जबकि धोबीघाट पुल के निकट अभी पोकलेन से शिल्ट निकालने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि नदी में कूड़ा डालने वालों के खिलाफ भी कार्रवाई की जा रही है।

डेंगू के दो संदिग्ध मरीज अस्पताल में भर्ती

देवरिया। डेंगू का प्रकोप बढ़ रहा है। प्रतिदिन मरीज मिल रहे हैं। डेंगू के दो संदिग्ध मरीज मिले हैं। मेडिकल कॉलेज से संबद्ध जिला अस्पताल के डेंगू वार्ड में उनका इलाज चल रहा है। ब्लड का नमूना जांच के लिए भेजा गया है। एक मरीज के ठीक होने पर उसे छुट्टी दे दी गई, जबकि प्लेटलेट्स कम होने के कारण तीन लोगों को रेफर किया गया है। इस समय अस्पताल में डेंगू के दो मरीजों का उपचार चल रहा है। विकास खंड देसही देवरिया क्षेत्र का एक युवक शहर के गोरखपुर ओवरब्रिज के समीप किराए के मकान में रहकर पढ़ाई करता है। चार दिन पहले बुखार, शरीर दर्द से पीड़ित हो गया। उसे उल्टी भी हो रही थी। उसने प्राइवेट में दवा ली, लेकिन आराम नहीं मिला। इसके बाद परिजन उसे लेकर बुधवार की शाम जिला अस्पताल की इमरजेंसी पहुंचे। यहां लक्षण के आधार पर चिकित्सक ने उसे डेंगू वार्ड में भर्ती कर इलाज शुरू कर दिया। वहीं, भटनी ब्लॉक क्षेत्र का युवक 31 अक्तूबर को राजस्थान के टापू खड़ा गया था। वहां एक चारपहिया वाहन की कंपनी में ट्रेनिंग कर रहा था। इसी बीच आठ नवंबर को वह बुखार से पीड़ित हो गया। प्राइवेट में दवा ली और ड्यूटी कर रहा था, लेकिन उसकी हालत गंभीर होने लगी। इसके बाद सोमवार को वह घर आ गया। उसी दिन परिजन उसे लेकर जिला अस्पताल के ओपीडी में पहुंचे, जहां परीक्षण के बाद डॉक्टर ने मेल मेडिकल वार्ड में भर्ती कर दिया। उसके बाद जांच कराई गई। रिपोर्ट आने के बाद बृहस्पतिवार को डेंगू वार्ड के शिफ्ट कर उसका इलाज शुरू कर दिया गया। प्लेटलेट्स कम होने के कारण बुधवार की शाम एक तथा बृस्पतिवार को दो मरीजों को रेफर कर दिया गया। उधर, जांच में बुधवार को पांच मरीजों में डेंगू की पुष्टि हुई। बृहस्पतिवार को 21 जांच किट से हुई। इसमें तीन संदिग्ध मरीज मिले। डेंगू की पुष्टि के लिए एलाइजा जांच की जा रही है। चिकित्सा अधीक्षक डॉ. एचके मिश्रा ने बताया कि डेंगू के मरीजों के इलाज की व्यवस्था की गई है। एमसीएच विंग में बीस बेड का वार्ड बनाया गया है। वहां पर चिकित्सक व स्टाफ नर्स की तैनात की गई है। दवा व जांच की निशुल्क सुविधा उपलब्ध है।

शहर के अबूबकर नगर मोहल्ले में टीम ने कराया छिड़काव

देवरिया। डेंगू को लेकर मलेरिया विभाग सक्रिय है। मरीजों की जानकारी मिलने पर क्षेत्र में एंटीलार्वा का छिड़काव कराया जा रहा है। साथ ही लोगों को जागरूक करने के साथ सोर्स रिडेक्शन कराया जा रहा है। शहर के अबूबकर नगर मोहल्ले में मरीज मिलने की सूचना पर बृहस्पतिवार को मलेरिया विभाग की टीम पहुंची। टीम में शामिल फाइलेरिया इंस्पेक्टर अनिल पांडेय, मलेरिया इंस्पेक्टर राकेश सिंह, संजय की टीम ने सर्वे और सोर्स रिडेक्शन किया। साथ ही एंटीलार्वा का छिड़काव किया गया।

केवल नाम के हैं हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर

देवरिया। जिले भर में 170 हेल्थ एंड वेलनेंस सेंटर स्थापित किए गए हैं। यहां के लिए करोड़ों रुपये की दवाएं भी आई हैं। ताकि लोगों का इलाज समय पर हो सके। पर हकीकत यह है कि इन सेंटरों पर दवाओं की कमी है। यहां तक कि क्षेत्र के लोगों को इसके बारे में जानकारी भी नहीं है। इसके चलते मरीजों की भी संख्या काफी कम मिल रही है। जिले के प्रत्येक ब्लॉक में कम से कम दस हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर बनाए गए हैं। ताकि सर्दी, जुकाम, बुखार जैसी बीमारियों से पीड़ित मरीजों को सीएचसी, पीएचसी और जिला अस्पताल तक की दौड़ न लगानी पड़े। इसके लिए स्वास्थ्य विभाग ने दवाओं की भी खरीदारी की है। बृहस्पतिवार को जनपद के कुछ हेल्थ एंड वेलनेस सेंटरों की पड़ताल की गई तो अधिकतर जगहों पर दवाओं की कमी मिली। वहीं, जागरुकता के अभाव में मरीजों की भी संख्या कम पाई गई। इतना ही नहीं कुछ सेंटर तो एक दो–घंटे के लिए खुले मिले। इसके बाद मनमर्जी से कर्मी ताला बंद कर चले गए। हेल्थ वेलनेस सेंटर–एकः लार रोड चुरिया, डमुरी, खेमादेई हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर तो खुले मिले, लेकिन इन जगहों पर मरीजों की संख्या काफी कम थी। इन सभी सेंटरों पर दर्द की दवाओं की कमी देखने को मिली। इसके कारण एक–दो मरीज इस सेंटर पर आने के बाद भी निराश होकर वापस चले गए। हेल्थ वेलनेंस सेंटर–दोः खुखुंदू में न्यू पीएचसी के पास हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर बनाया गया है, लेकिन दवाओं की कमी यहां भी देखने को मिली। कोई सीएचओ यहां पर तैनात नहीं है। इसके कारण मरीज भी हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर से मुंह मोड़ चुके हैं। पथरदेवा इलाके में दो जगह किराए पर चल रहे सेंटरः पथरदेवा ब्लॉक क्षेत्र में 27 हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर संचालित होने हैं। इसमें बंजरिया, खैराट, बसडीला जद्दूघुड़ी, सेमरीग सहित ग्यारह जगह कर्मचारी तैनात हैं। इसमें दो जगह किराए पर चल रहे हैं। इन सेंटरों का हाल यह है कि अभी सुव्यवस्थित तरीके से नहीं हैं। यह है सरकार की मंशाः हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर स्थापित करने के पीछे सरकार की मंशा है कि ग्रामीण क्षेत्रों में जिन स्थानों पर चिकित्सा सेवा की सुविधा नहीं है, उन क्षेत्रों में वैकल्पिक चिकित्सा सेवा पहुंचाई जा सके। यहां सीएचओ की तैनाती की जाती है। यहां टेलीमेडिसिन के माध्यम से उपचार भी किया जाता है। चिकित्सक के परामर्श व सलाह पर सेंटर पर उपलब्ध दवाएं दी जाती हैं। सीएचओ मरीज की स्क्रीनिंग करते हैं।

ब्लाक स्तरीय संगोष्ठी एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम हुआ आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

जोगिया/तुलसियापुर। समग्र शिक्षा अभियान के तहत ब्लॉक स्तरीय संगोष्ठी एवं उन्मुखीकरण समारोह का आयोजन उच्च प्राथमिक विद्यालय जोगिया के प्रांगण में हुआ। कार्यक्रम की शुरुवात खंड विकास अधिकारी सतीश सिंह व खण्ड शिक्षा अधिकारी कुंवर विक्रम पांडे के द्वारा संयुक्त रूप से मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर प्रारंभ हुआ। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यालय प्रबंध समिति एवं ग्राम प्रध ान की जिम्मेदारियों को अवगत कराया जाना था। जिसमें ग्राम पंचायत में 6–14 वर्ष के सभी बच्चों का विद्यालय में नामांकन कराना, विद्यालय में नामांकित बच्चों का शिक्षकों द्वारा प्रेरणा पोर्टल पर पंजीकरण करना, ग्राम के सभी बच्चों और उनके माता पिता अभिभावकों का आधार बनवाना, बच्चों और उनके माता पिता अभिभावकों का आधार की फोटोकॉपी शिक्षकों को उपलब्ध कराना। सभी माताधपिताध्अभिभावकों को अपना बैंक खाता आधार से सीडेड करने के लिए प्रेरित करना।

ग्राम प्रधान एवं विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्य यह सुनिश्चित करें कि कोई भी बच्चा और उसके अभिभावक डीबीटी संबंधित दस्तावेज के कारण वंचित न रहें। विद्यालय प्रबंध समिति एवं ग्राम प्रधान की जिम्मेदारियां हैं। डी. बी. टी. प्रक्रिया शुभारम्भ कार्यक्रम में विद्यालयों में अध ययनरत छात्र–छात्राओं के उपयोगार्थ निःशुल्क यूनीफॉर्म, स्वेटर, स्कूल बैग, जूता–मोजा तथा स्टेशनरी के क्रय से सम्बंधित धनराशि (डीबीटी) प्राप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर क्रय करने के लिए प्रेरित करें। विद्यालय प्रबंध समिति की मासिक बैठक में देखें कि सभी बच्चे यूनीफॉर्म में विद्यालय आ रहे हैं। यदि नहीं तो कारणों पर चर्चा कर सभी को क्रय करने के लिए प्रेरित करें। इस कार्यक्रम में भाजपा मंडल अध्यक्ष महेंद्र सिंह लोधी एसआरजी अंशुमान सिंह ए आर पी अनुपम सिंह प्रमोद त्रिपाठी अजय श्रीवास्तव शशिकांत त्रिपाठी देवेंद्र त्रिपाठी नोडल संकुल पंकज राय गौरव पांडे मनीष दुबे आशीष त्रिपाठी जितेंद्र त्रिपाठी रामप्रताप शर्मा धर्मेंद्र श्रीवास्तव उत्कर्ष श्रीवास्तव संजय कर पाठक सहित ग्राम पंचायतों के प्रधान गण व अन्य शिक्षक तथा गणमान्य जन उपस्थित रहे।

पक्षी का मानव से प्रेम जगत में सार और कोई सार नही साहब

जब कार्यालय में आते है तो चिड़िया आ जाती है और जब बाहर निकले है तो चली जाती है

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोलाबाजार/गोरखपुर। कुदरत का करिश्मा बड़े ही गजब का है। गोला तहसील में स्थित सी ओ कार्यालय में जब क्षेत्राधिकारी गोला जगत राम कन्नौजिया पहुचते है तो एक चिड़िया नियमित रूप से आ जाती है और दीवाल में स्थित रोशन दान पर बैठी रहती है। साथ ही रोशन दान पर बैठ कर अपनी क्रिया कलाप से ओत प्रोत करते रहती है। और अपने भाषा में क्या कहती है समझना तो मुश्किल है जब सी ओ साहब कार्यालय से बाहर निकलते है तो वह चिड़िया भी अपने आशियाने के लिए वहां से चल देती है। यह क्रिया कलाप चिड़िया का वहां बराबर बना रहता है। इस घटना क्रम का चर्चा कार्यालय में ही नही बल्कि क्षेत्र में भी बड़ी जोरो पर चल रही है। गौर तलब बात यह है कि चिड़िया के क्रिया कलाप में कोई भी किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नही करता ळें

पुलिस अधीक्षक ने किया जनप्रतिनिधिगण के साथ समन्वय गोष्ठी

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र।पुलिस अधीक्षक, सोनभद्र डॉ0 यशवीर सिंह द्वारा पुलिस लाइन

चुर्क स्थित पुलिस कार्यालय में जनपद के जनप्रतिनिधिगण के साथ मासिक समन्वय गोष्ठी आयोजित कर उनसे विचार–विमर्श किया गया।इस दौरान विधायक दुद्धी राम दुलार गौड़, जिलाध्यक्ष अजीत चौबे, सांसद प्रतिनिधि वेद प्रकाश आदि उपस्थित रहे।

अवैध कब्जा धारियों के विरुद्ध राजस्व विभाग ने जारी की नोटिस

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी। सरकार की मंशा के अनुसार प्रदेश भर में सरकारी जमीनों पर अवैध रूप से कब्जा जमाए अतिक्रमणकारियों के विरुद्ध अभियान चलाया जा रहा है! अभियान उपरोक्त के क्रम में ही तहसील क्षेत्र के बेलवा लगुनही में

चिन्हित किए गए दर्जनों अवैध कब्जा धारकों से कब्जे को लेकर उनका पक्ष जानने के लिए तहसील प्रशासन ने नोटिस जारी कर दिया है। उपजिलाधिकारी कार्यालय द्वारा जारी पत्र में स्पष्ट किया गया है कि खेसरहा तप्पा अन्तर्गत बेलवा लगुनही गाँव स्थित गाटा सं0 151ध0.77280 में कुल 11 बटे हैं जो क, ख, ग आदि से अंकित है। जिसमें खातेदारी का कुल क्षेत्रफल 0.2980 तथा बंजर के नाम रकबा 0.39180 सडक 0. 0010, खाद गडढा 0. 0820 व गाटा सं0 152ध0.01030 नवीन परती के नाम अभिलेखीय अंकित है। पत्र में कहा गया है कि उक्त गाटों के स्थलीय सत्यापन में पाया गया कि 1–मो० यासीन, मो0 इद्रीश, मो० याकूब, उम्मेद अली, इश्तियाक पुत्रगण समीउल्लाह,2–अब्दुल्लाह पुत्र समीउल्लाह 3–मो० जलील पुत्र हौसिलदार,4–नबीउलहक पुत्र मुख्तार, 5– जयप्रकाश, ओमप्रकाश पुत्रगण चुन्नीलाल, 6–सुरेमन पुत्र सुकदेव, 7–सैयद अली पुत्र दान मो०, 8– आबिद अली पुत्र दान मो०,9–मो० यासीन, मो0 इद्रीश, मो० याकूब पुत्रगण उम्मेद अली,10–इश्तियाक पुत्र समीउल्लाह, 11–सलाहुददीन पुत्र यादअली, 12–असलम पुत्र मो० इब्राहिम, 13–अली अहमद, जमील अहमद पुत्र गंण अब्दुल करीम,, 14–आफताब पुत्र अब्दुल समद, 15– सिराज अहमद पुत्र मो० मुस्तफा,16–ओमप्रकाश पुत्र मोलाहे,17–लालजी, चिन्नीलाल पुत्र पुल्लुर,18–मो० मुस्तफा, मो० मुर्तजा, मो० उमर पुत्रगण अजमत अली, 19–अब्दुल गनी पुत्र रियासत, 20– सुभान अली पुत्र रियासत, 21–अली हुसेन पुत्र शाह मो0, 22–अब्दुल रहमान, अब्दुल वहाब, अब्दुल कयूम पुत्रगण बुझारत अली द्वारा सरकारी जमीन उपरोक्त में पक्का निर्माण कर अवैध रूप से कब्जा कर लिया गया है! तहसील प्रशासन द्वारा अवैध कब्जा धारियों के खिलाफ राजस्व संहिता 2006 धारा 136 के तहत बेदखली हेतु सरकारी जमीन पर अवैध अतिक्रमण कारियों के खिलाफ नोटिस जारी करते हुए उन्हें अपना पक्ष रखने के लिए मौका देते हुए कहा गया है कि उपरोक्त सभी अवैध कब्जा धारक स्वयं अथवा किसी अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से नियत तिथि दिनांक 18.12.2022 को अधोहस्ताक्षरी के न्यायालय में प्रातः 10.00 बजे उपस्थित होकर प्रश्नगत अपनी आपत्तिध जवाबदेही प्रस्तुत करें। यदि नियत तिथि को विपक्षीगण द्वारा कोई आपत्तिध जवाब प्राविधानो के अन्तर्गत प्रस्तुत नहीं किए जाने की स्थिति में विपक्षीगण के विरूद्ध कार्यवाही कर दी जायेगी।

गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में चल रहे यूनेस्को–इंडिया–अफ्रीका हैकथॉन 2022 का समापन

■ यूनेस्को-इंडिया-अफ्रीका हैकथन 2022 के समापन एव पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के अवसर पर भारत के उपराष्ट्रपति रहे उपस्थित

■ भारत ने वैश्विक शांति और सहयोग के लिए एक विश्व, एक परिवार, एक भविष्य का नया मंत्र दिया: उपराष्ट्रपति

एच.पी.शर्मा/
दैनिक बुद्ध का संदेश

गौतमबुद्धनगर। उत्तर प्रदेश के जनपद गौतमबुद्धनगर में स्थित गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में 22 से 25 नवम्बर तक चल रहे यूनेस्को–इंडिया–अफ्रीका हैकथॉन 2022 का आज समापन हो गया। यूनेस्को–इंडिया –अफ्रीका हैकथॉन 2022 के समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भारत के मा0 उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ तथा साथ में उत्तर प्रदेश की मा0 राज्यपाल आनंदीबेन पटेल उपस्थित रही। आयोजित होने वाले हैकथॉन में 22 अफ्रीकी देशों एवं भारतीय छात्र छात्राओं को मिलाकर 20 विभिन्न समस्याओं का समाधान खोजने के लिए 100 टीमों के द्वारा प्रतिभाग किया गया, जिसमें आज 20 विजेता टीमों को माननीय उपराष्ट्रपति के द्वारा पुरस्कार के रूप में 3–3 लाख रुपये के चेक वितरित किए गये। इस कार्यक्रम के अवसर पर मा0 उपराष्ट्रपति ने अपने सम्बोधन में कहा कि यूनेस्को इंडिया अफ्रीका हैकथॉन के समापन सत्र में शामिल होना वास्तव में प्रसन्नता की बात है, उन्होंने हैकथॉन के विजेताओं को बधाई दी और इस प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए 600 प्रतिभागियों की सराहना की। उन्होंने कहा हैकथॉन एक ऐसा आयोजन है जहां लोग 24–48 घंटों के कम समय में तीव्र और सहयोगी इंजीनियरिंग में संलग्न रहते हैं। हैकथॉन का लक्ष्य घटना के अंत तक कार्यशील सॉफ्टवेयर या हार्डवेयर बनाना है, यह युवा नवोन्मेषकों को एक साथ आने, सामाजिक, पर्यावरणीय और तकनीकी समस्याओं के समाधान खोजने के लिए मिलकर काम करने का एक अद्भुत मंच प्रदान करता है, जिसमें भारत और अफ्रीका के हमारे मित्र देशों के युवा उद्यमियों के प्रतिभाशाली समूह शामिल है। इस हैकथॉन में अफ्रीका के 22 देशों के 350 से अधिक छात्रों की भागीदारी इसकी सफलता का सूचक है। उन्होंने कहा कि यूनेस्को भारत अफ्रीका हैकथॉन 36 घंटे तक लगातार चलने वाला हेकथॉन है, जो उल्लेखनीय रूप से छात्रों, शिक्षकों और भारत के अनुसंधान समुदाय और इसके अफ्रीकी भागीदारों को उनके देशों के सामने आने वाली आम चुनौतियों का समाधान करने और उनसे निपटने के लिए एक साथ लाता है। यह तंत्र सांस्कृतिक सम्मेलन के लिए एक सूत्रधार के रूप में भी पूरी तरह से कार्य करता है तथा दुनिया को बदलने की क्षमता वाले स्टार्ट–अप के निर्माण की नींव के रूप में भी कार्य करता है। माननीय उपराष्ट्रपति जी ने कहा कि वास्तव में प्रतिभागियों के लिए अपनी रचनात्मकता को उजागर करने के लिए एक उत्कृष्ट मंच–विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए नई तकनीकों का पता लगाना एवं आधुनिक दुनिया में व्यावसायिक नवाचार की अगुवाई करना तथा यह आयोजन भारत और उसके अफ्रीकी समकक्षों द्वारा पोषित घनिष्ठ संबंधों को भी दर्शाता है और सहयोग की भावना का प्रतीक है। भारत नवाचार और उद्यमशीलता का घर है, जोकि अवसरों और निवेशों के लिए एक पसंदीदा वैश्विक गंतव्य है। इसका उभरता हुआ पारिस्थितिकी तंत्र क्षमता के दोहन और प्रतिभा को बाहर निकालने के लिए अनुकूल है। उन्होंने शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, एआईसीटीई और यूनेस्को के इस 36–घंटे के हैकथॉन के आयोजन में सहक्रियात्मक कार्य के लिए इनोवेशन सेल की सराहना की और कहा कि भारत और अफ्रीका उपनिवेशवाद और रंगभेद के खिलाफ सभ्यतागत जुड़ाव और सामूहिक संघर्ष के ऐतिहासिक बंधन दोनों को साझा करते हैं। हम हिंद महासागर के पड़ोसी हैं। अफ्रीका के साथ भारत के संबंधों ने महात्मा गांधी से प्रेरणा लेते हुए भारत के विश्व दृष्टिकोण में एक नैतिक दिक्सूचक के रूप में काम किया है तथा हम अफ्रीका के अपने मित्रों को हर संभव नैतिक और भौतिक समर्थन देना जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत ने वैश्विक शांति और सहयोग के लिए एक विश्व, एक परिवार, एक भविष्य का नया मंत्र दिया है। उन्होंने कहा कि वसुधैव कुटुम्बकम हमारे युगों पुराने लोकाचार को प्रतिध्वनित करता है। जब हम एक दुनिया, एक परिवार, एक भविष्य का आह्वान करते हैं तो हम अपने विकास को टिकाऊ बनाने के लिए भावी पीढ़ियों और ग्रामीण समुदायों के आम लोगों के हितों को शामिल करते हैं।

अहिरौला में आज से शुरू होगा श्री राम लीला शुभारंभ: श्यामसुंदर चौधरी

दैनिक बुद्ध का संदेश

बढ़नी/तुलसियापुर। बढ़नी ब्लॉक के अहिरौला में आज शाम से श्री राम लीला धनुष यज्ञ का शुभारंभ होगा। श्री राम लीला धनुष यज्ञ तीन दिवसीय कार्यक्रम के रूप में सम्पन्न होगा। श्री राम लीला धनुष यज्ञ मेला समिति के अध्यक्ष श्याम सुंदर चौधरी ने बताया कि हमारे गांव में पिछले 47 वर्षो से श्री राम लीला और धनुष यज्ञ होता है। जिसमें गांव के कलाकारों द्वारा मंचन किया जाता है। इस वर्ष 48 वर्ष पूरे होने जा रहा है इसी तरह अनवरत गांव और अपने समाज की धार्मिक धरोहर को मंचन द्वारा जारी रखा जाएगा।

आज सबसे पहले रात्रि 8:00 बजे भगवान विष्णु की आरती के बाद माल्यापर्ण श्री राम लीला धनुष यज्ञ समिति के संस्थापक स्वर्गीय श्री राम चन्द्र चौधरी, स्व श्री मन्थु प्रसाद और स्व परमात्मा प्रसाद जी के प्रतिमा पर किया जाएगा। उसके बाद नारद मोह, इन्द्र का दरबार, नारद मुनि भ्रमण,विश्व मोहनी स्वयंबर,भगवान विष्णु का विवाह,रावण अत्यचार रूप में गांव के कलाकारों द्वारा मंचन किया जाएगा। मनमोहक दृश्य कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाएग। 28 नवम्बर को दिन में भव्य मेला लगेगा। जिसमें समस्त क्षेत्रवासियों को सादर आमंत्रित करता हूँ।

मां वैष्णवी वेद विज्ञान परिषद द्वारा हवन यज्ञ संपन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोला/गोरखपुर। गगहा ब्लाक के अंतर्गत रानीपार ग्राम में मां वैष्णवी वेद विज्ञान परिषद द्वारा आयोजित मासिक कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण और जनकल्याण हेतु दुर्गा सप्तशती के तेरहो अध्याय एवं पुरुष सूक्त श्री सूक्त सहित अन्य अन्य वैदिक मंत्रों से आहुति संपन्न हुआ तथा मां वैष्णवी वेद विज्ञान परिषद के प्रमुख महेश आनंद त्रिपाठी जी ने कार्यक्रम के अंतर्गत सभी को नित्य अपने घरों में दुर्गा चालीसा का पाठ और सामूहिक रूप से धर्म चिंतन करने के लिए प्रेरित किए और कहा कि मां के पूजा के बिना सारा पूजा अधूरा है मां की आराधना सर्वश्रेष्ठ है गोष्ठी के दौरान प्रमुख जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि ब्राम्हण समाज एक होकर के अपनी और अपने समाज देश की रक्षा करें आज ब्राह्मणों को एक होने की आवश्यकता है इसी से समाज के

चारों वर्णों की सफलता एवं धर्म का कार्य समुचित रूप से संपन्न किया जा सकता है ब्राह्मणों को आपने धर्म के प्रति संस्कृति ऋषि परंपरा के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है वही मां वैष्णवी वेद विज्ञान परिषद के महासचिव प्रभारी (विद्वत प्रकोष्ठ) आचार्य जितेंद्र राम त्रिपाठी ने वैदिक मंत्रों के द्वारा पूजन अर्चन के सहित संपूर्ण कार्यक्रम को संपन्न कराया और दुर्गा चालीसा का सामूहिक रूप से पाठ करा कर के गोष्ठी का आयोजन किया जिसमें श्री जितेंद्र त्रिपाठी ने बताया की जो दुर्गा चालीसा का 9 बार पाठ अपने घर में करता है उनको दुर्गा सप्तशती के पाठ करने का फल प्राप्त हो जाता है दुर्गा सप्तशती का पाठ संस्कृत में होने के कारण कठिन है दुर्गा चालीसा सरल एवं सहज स्वयं सिद्ध है और समस्त भक्तों को अपने अपने घरों में दुर्गा चालीसा का पाठ करना चाहिए माता की आराधना के नियमों के बारे में बताया कि जो मां की अर्चना बंदना पूजन आरती करतें है उनके कार्य स्वयं भगवती करती है जो जो मनुष्य कामना करता है वह वह निश्चित प्राप्त होता है और ब्राह्मणों के बारे में धर्म के बारे में विस्तृत रूपसे बताया कि हम सभी को सिखा चंदन रक्षा सूत्र अवश्य लगाना चाहिए धारण करना चाहिए यह हमारे हिंदू होने का एक आभूषण है आभूषण के बिना जिस प्रकार नारी विधवा जैसी प्रतीत होती है उसी प्रकार द्विज ब्राम्हण तिलक, जनेऊ, चोटी, रक्षासूत्र और संध्या से हीन होने पर प्रतीत होते हैं कार्यक्रम में गगहां प्रभारी आलोक त्रिपाठी तथा पंडित संतोष पांडे, निधिप्रमुख आचार्य गोरखनाथ चतुर्वेदी अपनी अपनी विचार को प्रस्तुत किए जिसमेंआचार्य ईश्वर पांडे सपरिवार प्रमुख रूप से यजमान रहे और गांव के अनेकानेक संभ्रांत गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

समाज कल्याण मंत्री ने किया पलिया ग्राम पंचायत का उद्घाटन

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश के समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव

गोंड ने शुक्रवार को रॉबर्ट्सगंज ब्लॉक के पलिया ग्राम पंचायत में नवनिर्मित पंचायत भवन का विधि विधान से पूजन अर्चन करके तथा रिबन काटकर उद्घाटन किया, उद्घाटन के अवसर पर राज्य मंत्री ने कहा की केंद्र एवं प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार गरीबो के हित में लगातार काम कर रही है, गरीबों को गांव में सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ ग्राम पंचायतो में मिले इसके लिए ग्राम पंचायत सचिवालय बनाये जा रहे है, गरीब बेटियों की शादी करानी हो, पक्का आवास बनवाना हो या फिर ग्राम पंचायतो में बिजली पहुँचाने का काम हो वह सब सरकार कर रही है, कहा की ग्रामीण एक छत के निचे ऑनलाइन सुविधाओं का लाभ ले सकेंगे, ब्लॉक प्रमुख अजीत रावत ने मंत्री का स्वागत करते हुए सरकार की योजनाओं पर प्रकाश डाला, वहीं संचालन कर रहे प्रधान संघ के ब्लॉक अध्यक्ष सुरेश शुक्ला ने उपस्थित कई ग्राम पंचायत के प्रधानों से मंत्री व ब्लॉक प्रमुख का स्वागत कराया, इस दौरान ग्रामीणों ने पलिया राजस्व गांव के साथ अन्य गाँवो को जोड़ने वाले मार्ग पर स्थित बेलन नदी पर पक्का पुल बनाये जाने की मांग की गई मंत्री ने पुल बनवाने का आश्वासन दिया इस मौके पर एडीओ पंचायत केएस शुक्ला, पलिया ग्राम प्रधान मुस्लिम बेग, सचिव दिनेश गिरी भाजपा जिला मिडिया प्रभारी अनूप त्रिपाठी अबरार बेग सुदामा मौर्या रामेश्वर शुक्ला पंचायत सहायक शाहबान अली आदि मौजूद रहे।

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458

संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा

9415163471, 9453824459
दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917,9415163471
@budhakasandesh
budhakasandeshnews@gmail.com
www.budhakasandesh.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244
थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

राष्ट्रीय दैनिक
बुद्ध का संदेश

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र खेसरहा के निमार्ण कार्य पर लग रहा प्रश्न चिन्ह

बनाये जा रहे 20 सैय्या के अस्पताल में लगाया जा रहा है कमजोर किस्म के ईंट और सरिया लगाने का आरोप

दैनिक बुद्ध का संदेश

खेसरहा/सिद्धार्थनगर। सरकार जहाँ स्वास्थ्य और चिकित्सा

पर पानी के तरह पैसे बहा रही है वही सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र खेसरहा में बनाये जा रहे 20 सैया वाले भवन के निर्माण में कई तरह की अनियमितता देखने को मिल रहा है डाले गये पीलर की सरिया पीलर से बाहर दिखाई दे रहा है जो मानक के अनुसार कमजोर बताया जा रहा है,दूसरे दर्जे की ईट,छत लदने के बाद तरी कभी नहीं किया गया, जानकारी के लिए जब प्रभारी डा. शेषभान गौतम से पुछा गया तो उन्होंने बताया की इसकी शिकायत उच्च अधिकारियों को कर दिया गया है, विचार करने की बात तो यह है की सारी शिकायतों के बावजूद कार्य चल रहा है।

पुलिस अधीक्षक ने सप्ताहिक परेड की ली सलामी, किया गया निरीक्षण'

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र।डॉ0 यशवीर सिंह, पुलिस अधीक्षक द्वारा पुलिस

लाईन परेड ग्राउंड में साप्ताहिक शुक्रवार परेड की सलामी ली गई तथा परेड का निरीक्षण किया। तत्पश्चात पीआरवी वाहनों का निरीक्षण कर उपलब्ध समस्त आपातकालीन उपकरणों चेक किया गया तथा प्रभारी यूपी 112 को निर्देशित किया गया कि पीआरवी वाहनों व उसके उपकरणों की लगातार चेकिंग करें पीआरवीकर्मी अपने–अपने स्थान पर सतर्क दृष्टि रखते हुए पब्लिक की सुरक्षा और सेवा में समर्पित रहें। तत्पश्चात पुलिस अधीक्षक द्वारा पुलिस लाईन निरीक्षण के दौरान बैरक, भोजनालय, परिवहन शाखा तथा पुलिस बैरकों आदि का निरीक्षण कर सम्बंधित को मरम्मत, साफ–सफाई एवं रख–रखाव के संबंध में आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए।इस दौरान क्षेत्राधिकारी अमित कुमार तथा प्रतिसार निरीक्षक धर्मेन्द्र सिंह एवं पुलिस लाईन के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहें।'

लोगों में हैं हृदय संबंधी बीमारियों से जुड़े ये भ्रम, जानिए इनकी सच्चाई

विश्व स्तर पर हृदय रोग हर साल 17.9 लाख मौतों का कारण बनता है और इसके जिम्मेदार इलाज को अनेदखा करना और झूठी धारणाएं हो सकती हैं। दरअसल, हृदय संबंधी रोगों को लेकर लोगों में कई ऐसी धारणाएं या भ्रम हैं, जो हृदय रोग से ग्रस्त लोगों के लिए खतरा साबित हो सकती है या फिर शरीर को हृदय रोगों की चपेट में लाने का कारण बन सकती हैं। आइए आज कुछ भ्रम और उनकी सच्चाई जानें।

भ्रम– अधिक उम्र में होते हैं हृदय संबंधी रोग

यह सिर्फ एक भ्रम है कि हृदय रोग अधिक उम्र के लोगों को ही होता है, जबकि ऐसा नहीं है। हृदय रोग किसी भी उम्र में हो सकता है। असंतुलित जीवनशैली, गलत खान–पान और मोटापा आदि इसका खतरा बढ़ा सकते हैं। कई अध्ययनों के अनुसार, दिल के दौरे के 60 प्रतिशत लोग 50 वर्ष से कम उम्र के होते हैं और 40 प्रतिशत अन्य हृदय रोगों से ग्रस्त लोगों की उम्र 40 वर्ष से कम होती है।

भ्रम– आनुवंशिक हृदय रोग का इलाज नहीं होता है

कई लोगों का ऐसा मानना है कि आनुवंशिक हृदय रोग का इलाज नहीं होता है, लेकिन यह एक भ्रम से ज्यादा और कुछ नहीं है। अगर आपके माता–पिता को हृदय रोग होने के कारण यह आपको भी है तो इसके जोखिमों को कम करने के लिए कुछ कदम उठाए जा सकते हैं। शारीरिक रूप से सक्रिय रहें, स्वस्थ भोजन करें, वजन बनाए रखने समेत ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर और कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखना बहुत जरूरी है।

भ्रम– हाई ब्लड प्रेशर के लक्षण होते हैं

अगर आपका मानना है कि हाई ब्लड प्रेशर के लक्षण होते हैं तो बता दें कि यह सिर्फ एक भ्रम है। हाई ब्लड प्रेशर एक साइलेंट किलर समस्या है। इससे जुड़े कोई शारीरिक लक्षण हैं और यह कभी भी किसी भी व्यक्ति को दिल के दौरे जैसी बीमारियों की चपेट में ला सकता है। इसलिए समय–समय पर अपने ब्लड प्रेशर की जांच करवाना जरूरी है।

भ्रम– सीने में दर्द होना ही दिल के दौरे का एकमात्र लक्षण है

शायद यह सबसे आम भ्रम है कि सीने में दर्द होना दिल के दौरे का एकमात्र लक्षण है, लेकिन यह सच नहीं है। सीने में दर्द होने के साथ–साथ सांस की तकलीफ, सीने में जलन, पेट के ऊपरी हिस्से में दर्द, मतली, उल्टी, पीठ में दर्द, जबड़े में दर्द, चक्कर आना और अत्यधिक थकान आदि भी दिल के दौरे के लक्षण होते हैं। महिलाओं की तुलना में पुरुषों को दिल का दौरा पडने की संभावना अधिक रहती है।

भ्रम– दिल का दौरा पडने के बाद एक्सरसाइज करना जोखिम भरा हो सकता है

यह भी हृदय स्वास्थ्य से जुड़ा एक आम भ्रम है कि दिल का दौरा पडने के बाद एक्सरसाइज करना जोखिम भरा हो सकता है, जबकि यह एक गलत धारणा है। भले ही कोई भी हृदय रोग हो, उसके जोखिम को कम करने के लिए डॉक्टरी सलाह के अनुसार अपने रूटीन में एक्सरसाइज को शामिल करें। दिन में 30–45 मिनट तक ब्रिस्क वॉक करना सबसे अच्छी एक्सरसाइज में से एक है।

नेहा भसीन ने पहनी हद से ज्यादा रिवीलिंग ड्रेस

पंजाबी इंडस्ट्री और बॉलीवुड सिंगर नेहा भसीन आए दिन अपने स्टनिंग और बोल्ड फैशन सेंस के कारण चर्चाओं में रहती हैं। नेहा जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर करती हैं तो

फैंस उनकी तस्वीरों पर जमकर प्यार लूटाते हैं। हाल ही में नेहा भसीन ने अपने बर्थडे की कुछ तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर की हैं। इन तस्वीरों में नेहा भसीन का बोल्ड ड्रेसअप देख कर फैंस की पलके झपकते नहीं बन रही हैं। नेहा भसीन हमेशा अपने बोल्ड और हॉट अदाओं के चलते हमेशा चर्चाओं में रहती हैं। हाल ही में नेहा भसीन ने अपने थ्रोबैक बर्थडे की कुछ तस्वीरें इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर की हैं। इन तस्वीरों में नेहा भसीन का लुक देख कर फैंस उनकी तारीफ करते हुए नहीं थक रहे हैं। नेहा भसीन इन तस्वीरों में सिंगल स्ट्रैप व्हाइट कलर का स्टाइलिश डीप नेक टॉप और साथ ही फ्रिल्स टाइप में सकर्ट पहनी हुई है। ओपन हेयर न्यूड मेकअप कर के नेहा भसीन ने अपने इस आउटलुक को कंप्लीट किया है। डीप नेक टॉप में क्लीवेज फ्लॉन्ट और साथ ही हाथ में बने टैटू को दिखाते हुए नेहा भसीन ने हॉट फोटोशूट करवाया है। इन तस्वीरों में नेहा भसीन अपने परफेक्ट टोंड थाई फ्लॉन्ट करती हुई नजर आ रही हैं। नेहा भसीन जब भी अपनी तस्वीरें और वीडियोज इंस्टाग्राम पर शेयर करती हैं तो फैंस उनकी तस्वीरों पर अपनी–अपनी प्रतिक्रियाएं देते हैं।

अमिताभ और रश्मिका की फिल्म गुडबाय सिनेमाघरों के बाद अब नेटफ्लिक्स पर आएगी

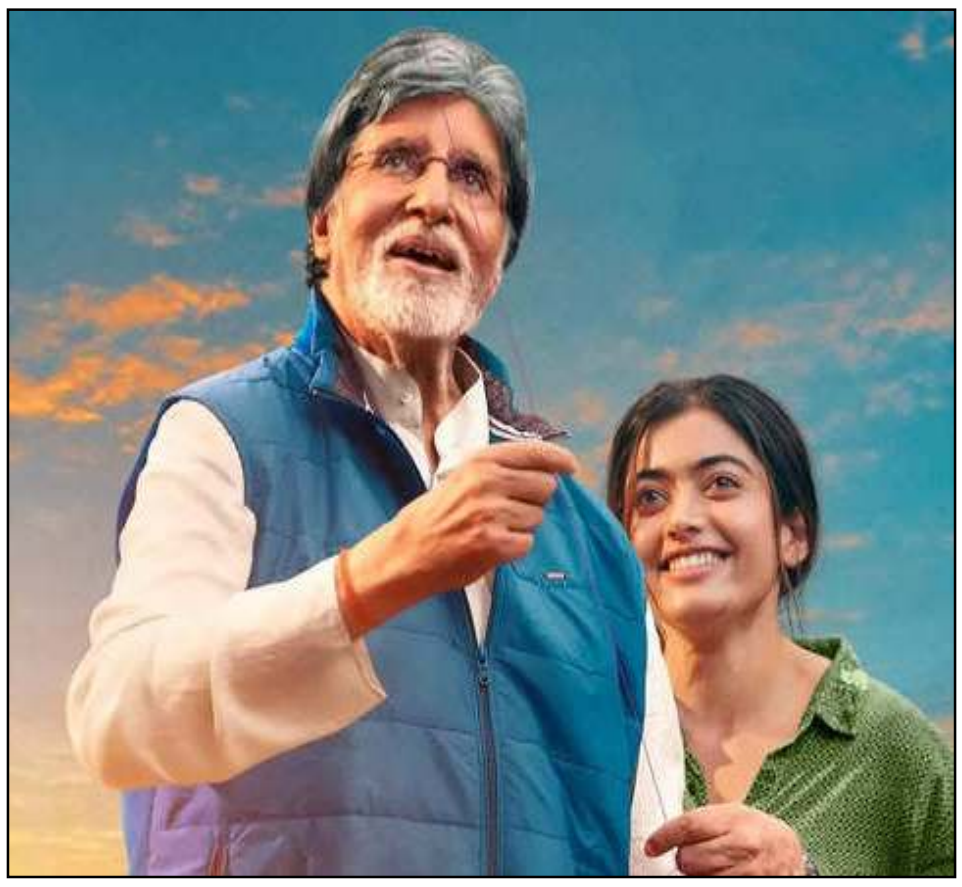

अमिताभ बच्चन और साउथ की लोकप्रिय अदाकारा रश्मिका मंदाना अभिनीत फिल्म गुडबाय सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। हालांकि, इस फिल्म को दर्शकों से कुछ खास प्रतिक्रिया नहीं मिली, लेकिन समीक्षकों ने इसकी तारीफ की। अब यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आने वाली है। अगर आपने यह सिनेमाघरों में नहीं देखी तो आप घर पर बैठे ही नेटफ्लिक्स पर इसका लुत्फ उठा पाएंगे। नेटफ्लिक्स ने फिल्म की रिलीज डेट की घोषणा कर दी है।

7 अक्टूबर को रिलीज हुई यह फिल्म रिलीज होने के दो महीने से भी कम समय में डिजिटल प्लेटफॉर्म की ओर रुख करने को तैयार है। फिल्म नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगी। ओटीटी प्लेटफॉर्म ने इसकी पुष्टि कर दी है। नेटफ्लिक्स ने ट्विटर पर गुडबाय का पोस्टर शेयर कर अपने पोस्ट में लिखा, यह सर्दी अब और भी बेहतर होने वाली है, क्योंकि आने वाले 2 दिसंबर को गुडबाय हमें गर्मजोशी के साथ गले लगाने के लिए तैयार है। रणदीप हुड्डा की वेब सीरीज कैट और चर्चित शो इंडियन मैचमेकिंग का तीसरा सीजन भी नेटफ्लिक्स पर आने वाला है। बाबिल खान की पहली फिल्म काला 1 दिसंबर को नेटफ्लिक्स पर आएगी। ऑस्कर जा रही फिल्म छेल्लो शो 25 नवंबर से नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगी। गुडबाय बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप साबित हुई थी। आलम ये रहा कि निर्देशक विकास बहल की यह फिल्म महज 6.38 करोड़ रुपये का कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन ही कर पाई थी, जबकि फिल्म 9 करोड़ रुपये के बजट में बनी थी। दर्शकों को कलाकारों को अभिनय तो पसंद आया, लेकिन कुछ को अमिताभ और रश्मिका की जुगलबंदी फिल्म में कुछ खास पसंद नहीं आई। बहरहाल, अब देखते हैं ओटीटी पर गुडबाय कैसा प्रदर्शन करती है।

कुछ ऐसी है फिल्म की कहानीः गुडबाय एक कॉमेडी ड्रामा फिल्म है। फिल्म में आज के आधुनिक परिवार को दिखाया गया है, जो मां–बाप से दूर शहरों में अपनी जिंदगियों में व्यस्त है। इस बीच अचानक परिवार के एक सदस्य का निधन हो जाता है, जो बिखरे हुए इस परिवार को करीब लाने का काम करता है। गुडबाय में अमिताभ (हरीश) और नीना गुप्ता (गायत्री) पति–पत्नी के किरदार में हैं, जिसके चार बच्चे हैं और सभी घर से दूर जाकर बस गए हैं।

एकता कपूर की फिल्म गुडबाय में यूं तो अमिताभ, नीना गुप्ता, पावेल गुलाटी, एली अवराम, सुनील ग्रोवर और साहिल मेहता जैसे कई कलाकार अहम भूमिका में दिखे हैं, लेकिन फिल्म में सबकी निगाहें रश्मिका पर थीं, क्योंकि यह उनकी पहली बॉलीवुड फिल्म थी। हालांकि, उन्होंने अपने बॉलीवुड डेब्यू से निराश नहीं किया। फिल्म में उन्होंने अपने किरदार के साथ न्याय किया। मिशन मजनू उनकी दूसरी बॉलीवुड फिल्म है, जिसमें रश्मिका की जोड़ी सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ बनी है।

डॉक्यूमेंट्री द एलिफेंट व्हिस्पर्स नेटफ्लिक्स पर 8 दिसंबर को होगी रिलीज

स्ट्रीमिंग दिग्गज नेटफ्लिक्स की शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री द एलीफेंट

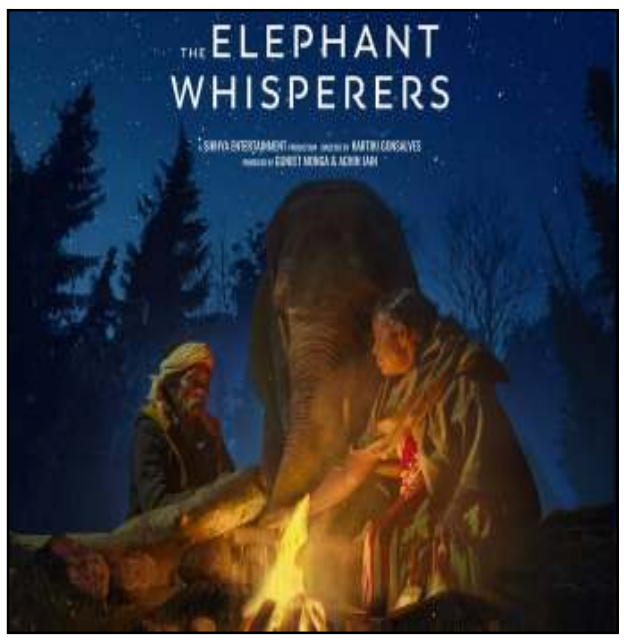

व्हिस्पर्स का प्रीमियर 8 दिसंबर को होगा। सबसे बड़ा और प्रतिष्ठित डॉक्यूमेंट्री फेस्टिवल– डीओसी एनवाईसी 2022 फिल्म फेस्टिवल 10 नवंबर को शॉर्ट वृत्तचित्र को पिछले सप्ताह यू.एस. में प्रदर्शित किया गया था। डीओसी एनवाईसी सांस्कृतिक बदलाव का जश्न मनाता है और इसका समर्थन करता है कि कैसे डॉक्यूमेंट्री स्टोरीटेलिंग पहले की तरह फल–फूल रही है। द एलिफेंट व्हिस्पर्स एक स्वदेशी जोड़े की दिल को छू लेने वाली कहानी है, जिन्हें देखभाल के लिए एक अनाथ हाथी रघु दिया गया है। कहानी युगल की यात्रा का अनुसरण करती है क्योंकि वे रघु की देखभाल और अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए लगातार काम करते हैं। लघु वृत्तचित्र खूबसूरती से इस कहानी को पिरोती है कि कैसे युगल समय के दौरान राजसी प्राणी के प्यार में पड़ जाते हैं। दक्षिण भारत के जंगली स्थानों में जीवन की पृष्ठभूमि के खिलाफ सेट, द एलिफेंट व्हिस्पर्स विदेशी वन्य जीवन, अविस्मरणीय जंगली स्थानों और इस स्थान को साझा करने वाले लोगों और जानवरों की सुंदरता पर प्रकाश डालता है। निर्माता गुनीत मोंगा ने साझा किया, यह दिल को छू लेने वाला है और दक्षिणी भारत में वन्य जीवन और जंगली स्थानों की सुंदरता के साथ–साथ इस ग्रह पर न केवल प्रकृति बल्कि अन्य जीवित प्राणियों के साथ साझा किए गए सुंदर संबंध को उजागर करता है। यह लघु वृत्तचित्र कार्तिकी गोंसाल्वेस के निर्देशन में बनी पहली फिल्म है। लघु वृत्तचित्र का निर्माण सिख्या एंटरटेनमेंट के बैनर तले गुनीत मोंगा और अचिन जैन द्वारा किया गया है।

छोटे बच्चे को न खिलाएं ये चीजें, सेहत को पहुंचा सकती हैं नुकसान

छह महीने के बाद से बच्चों को दूध के साथ–साथ ठोस आहार का सेवन करवाना शुरू कर देना चाहिए, लेकिन कुछ चीजें बच्चों के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकती हैं। इस सूची में गाय का दूध, मीठे व्यंजन, रिफाइंड अनाज और पाश्चुरीकृत जूस आदि चीजें शामिल हैं, जिनका सेवन छोटे बच्चों को करवाना बाल चिकित्सक सही नहीं मानते हैं। आइए जानते हैं कि ये खान–पान की चीजें छोटे बच्चों के लिए क्यों नुकसानदायक हैं।

गाय का दूधः छोटे बच्चों के लिए गाय का दूध पचाना कठिन हो सकता है। वहीं, गाय के दूध में आयरन और विटामिन–श्व जैसे सभी पोषक तत्व भी नहीं होते हैं और एक बच्चे के विकास के लिए इन पोषक तत्वों की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। एक बार जब आपका बच्चा एक साल का हो जाए तो आप उसे सीमित मात्रा में गाय का दूध पिला सकते हैं।

मीठी चीजेंः अपने छोटे बच्चे को मीठी चीजें खिलाने से उनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। चॉकलेट और कैंडीज आदि के सेवन से बच्चों के दांतों और समग्र स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाल सकता है। शायद आपको न पता हो, लेकिन बच्चे को किसी भी रूप में शहद देने से उसको बोटुलिज्म हो सकता है। अगर आपके बच्चे को मीठा अच्छा लगता है तो आप उसे केले जैसे फल खिला सकते हैं, क्योंकि ये पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं।

पाश्चुरीकृत फलों का जूस

पाश्चुरीकृत फलों का जूस छोटे बच्चों में मां के दूध की भूख को कम कर सकता है, जो जीवन के पहले वर्ष में उसका मुख्य आहार होना चाहिए। यह जूस इनके दांत खराब करने के साथ–साथ कई पाचन संबंधित समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। छोटे बच्चों को हमेशा घर में बना ताजा फलों का जूस देना ही सही रहता है।

रिफाइंड अनाजः छोटे बच्चों को सफेद चावल और सफेद ब्रेड जैसे रिफाइंड अनाज का अधिक सेवन कराने से उन्हें हृदय रोग, मधुमेह और ट्राइग्लिसराइड्स जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इनकी बजाय छोटे बच्चों की डाइट में साबुत अनाज से युक्त चीजों को शामिल करें। साबुत अनाज फाइबर से भरपूर होते हैं, जो ब्लड शुगर को स्थिर रखने में मदद करते हैं। इसके अतिरिक्त इससे बच्चों के समग्र स्वास्थ्य को बहुत लाभ होता है।

पनीरः अगर आपका बच्चा अभी एक साल का भी नहीं हुआ है तो उसे पनीर न खिलाएं। माना कि पनीर एक स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थ है, लेकिन छोटे बच्चों को पनीर का सेवन फायदे की बजाय नुकसान पहुंचा सकता है। इसका मुख्य कारण यह है कि पनीर में लिस्टेरिया नामक बैक्टीरिया होता है, जो बच्चे के पाचन को प्रभावित कर सकता है। इससे आपके बच्चे को पाचन संबंधी परेशानी झेलनी पड़ सकती है।